अश्वत्थ

THE FOUNTAIN HEAD

takshila
value series

अश्वत्थ : तक्षशिला दृष्टि

स्वदेशवीथियों में या प्रवास में
कोई निरत था, अपने लक्ष्य-न्यास में
इसी निरंतर प्रयास बीच
किसी क्षण, अनायास बीच -
उसके निरभ्र मानस - आकाश पर उग आया
एक पूरा इंद्रधनुष
सात रंगों के सम्मोहन ने
फिर दिया उसे दिशा-निर्देश -
'विगत, आगत और आगम के अंतर का विस्तार
इसे जो कर सको एकाकार
तो रंगों की कूजित यात्रा प्रशंसनीय है
कि नव क्षितिजों का अनुसंधान
तुम्हें चिरप्रिय है-'

और इसलिए तक्षशिला को अर्थात मुझे स्वरूप मिला। मैं अपने सृजनकर्ता को प्रजापति के पर्याय के रूप में देखती हूँ और मानती हूँ कि मैं उसके विचारों की घनीभूत पीड़ा का सक्रिय, और शुभफलदायी परिणाम हूँ।

मेरी स्थापना की पृष्ठभूमि में जो मस्तिष्क 'कर्मण्यवादिकारस्ते' के सार की निरंतर परिक्रमा करता चल रहा है, उसने अपनी इच्छा-यात्रा को अर्थपूर्ण और अविराम रखने के लिए सबसे पहले एक ऐसे शिक्षापीठ के निर्माण की बात सोची जहाँ कालानुरूप शिक्षा दी जाए। कालानुरूप का सामान्य प्रचलित अर्थ चल रहे समय के साथ होना है और प्रगति के प्रतिशत को बनाए रखने के लिए यह अर्थ सर्वथा उपयुक्त भी है क्योंकि जो वर्तमान के साथ है, उसी में युगांतरकारी शक्तियों के होने की संभावना होती है। इस स्थापित अर्थ के साथ लम्बी अवधि तक चले विचार-विमर्श और अंततः इससे पूर्ण सहमति पाने के बाद ही इसकी रुढ़ि बनी हुई

सीमा को विस्तार और प्रसार देने के लिए मेरा कर्ता प्रतिबद्ध और उद्यत हुआ। पर इस विस्तार और प्रसार को आकार देने से पूर्व, उस आकार से जुड़े भावी कार्यों के कुशल नेतृत्व और कालनिष्ठ संचालन के लिए एक प्रशासनिक केन्द्र का आरंभ होना अनिवार्य था और इस अनिवार्यता के साथ उस केन्द्र का नामकरण भी जुड़ा था क्योंकि नाम का निश्चित प्रभाव होता है अन्यथा युगों के नाम सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलयुग नहीं होते, कुछ और होते। किन्तु उन्हें ये नाम ही दिए गए क्योंकि हर नाम संबद्ध युग को अर्थ के विराट चित्र-फलक पर दृश्यमान करता है। प्रशासनिक केन्द्र को भी ऐसा नाम चाहिए था जिस नाम में काल के तीनों स्वरूप प्रतिध्वनित हों; जो नाम प्राचीनतम, अर्वाचीनतम और आगम की धाराओं के मेल का तीर्थराज प्रयाग लगे और इसलिए - 'तक्षशिला' - इस नाम से उस प्रशासनिक केन्द्र की शुरुआत हुई।

भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी तक्षशिला, राजा जनमेजय द्वारा किए गए सर्पयज्ञ की भूमि तक्षशिला - नाम के निश्चित प्रमाणित प्रभाव के चिरस्थापित आधार का विश्वास पाकर, जनमेजय की भूमिका को जीकर, रघुकुल की मर्यादा को लेकर मैंने - तक्षशिला ने (पूरा नाम - तक्षशिला शैक्षिक संस्थान / तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी) 'न हन्यते' ज्ञानयज्ञ का अनुष्ठान आरंभ किया।

नगर के कोलाहल से दूर, नवीनतम तकनीकों के प्रयोग से विद्याभवनों का निर्माण और उन्हें आधुनिकतम उपकरणों से सज्जित करवाना मेरे शिल्पकार के कर्म की छेनी पर प्रयास के हथौड़े की पहली चोट था। मैं निर्माण की प्रक्रिया से गुजरने लगी। इन शिक्षापीठों में मैंने वर्तमान शिक्षा नीति द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम की शिक्षा उपलब्ध करवायी है तो नई पीढ़ी के समक्ष परंपराओं का कंचन कलश भी रखा है; संस्कारों की सुगंधित समिधा प्रज्वलित कर शिक्षार्थियों की दिनचर्या को परिधूपित किया है तो प्रयत्नों के यज्ञकुंड से उठे धूम से उनका हर भाँति परिष्कार भी किया है। मेरे नाम के इतिहास के कनक दुर्ग को यह मान्य है कि नई नस्ल को , कलम और तूलिका, वाणी और भंगिमा, स्वर, वाद्य और विभिन्न नृत्य शैलियों, खेल और गणित, वर्तनी और उच्चारण, कंप्यूटर और वृक्षारोपण - इन नाना विधाओं के समानांतर प्रशिक्षण और अभ्यास से, इनके संचालन की क्षमता मिले ताकि जब वह भविष्य की परिधि में खड़ी हो तो सारी चुनौतियों को खुलकर स्वीकार करे, पारिवारिक संबंधों के भावनात्मक मूल्य को समझे, नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजग हो और मानवीय धर्म को अंगीकार करे। समय के दीवाने-आम में मौजूद नये-पुराने

सारे लम्हात की उम्मीदों पर हर कोशिश बाइज़्ज़त पूरी उतरे , इसलिए मेरी पंचवटी के तपस्वियों ने अपनी साधना को सतत एक नया आयाम दिया है और उन्हीं नये आयामों के अन्वेष की शृंखला की अगली कड़ी है - अश्वत्थ।

'अश्वत्थ' का अर्थ है पीपल और भारतीय वांग्मय में पीपल मात्र एक वृक्ष का आभास नहीं है। पीपल, जिसे 'बोधि' भी कहते हैं, ज्ञान से दीप्त होने की तापसी प्रक्रिया का शुभंकर स्रोत है। नाम के प्राप्य चारु प्रतिबिम्ब की प्रत्याशा में इस संग्रह के माथे अश्वत्थथ का नाम अभिषेक दिया गया है ताकि अश्वत्थ से बुद्धत्व की महाभेंट लेकर जैसे सिद्धार्थ गौतम बुद्ध बने, वैसे ही यह अश्वत्थ भी विगत, आगत और आनेवाली पीढ़ियों की अनंत संभावनाओं को जगाकर, उन्हें एक निश्चित, सुदीर्घ यात्रा की प्रभासित दिशा का संकेत दे सके।

अश्वत्थ प्रार्थनाओं का संग्रह है - और प्रार्थना है क्या - गीत ही तो है। गीत, जिसके लिए कहा गया है कि,

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान,
निकल कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।'

एक रचना को जन्म देने के लिए प्रसव की जिस पीड़ा से रचनाकार गुज़रता है उसे या तो केवल दूसरा रचनाकार ही अनुभूत कर सकता है क्योंकि -

'जांसोज़ की हालत को जांसोज़ ही समझेगा'

- या फिर, वे सुधी पाठक समझते हैं जो रचनाओं को पढ़ते हुए रचनाकार की भावधर्मिता से साधारणीकृत होकर रचना के मर्म तक पहुँचते हैं। अब कुम्हार तो केवल आजीविका के लिए चाक घुमाता है। घड़ा, सुराही, दीया या जो भी पात्र वह गढ़ता है, उसका कोई अन्यथा प्रयोजन नहीं होता। उसके गढ़े दीयों में से एक दीया मंदिर के आँगन में जले और एक मरघट में तो ना ही दीया अपने मिट्टी-तत्व से विच्छिन्न होता है और ना ही उसका कर्म बदलता है, चाहे वह मंदिर में जले या मरघट में; महल में जले या कुटिया में।

'काँच, कोई माटी, कोई रंग-बिरंगे प्याले,
प्यास लगे तो एक बराबर जिसमें पानी डाले'

- जैसे पानी का एक धर्म है, मिट्टी का एक धर्म है, वैसे ही गीत का एक धर्म हैं - जिसका काम है, पढ़ने-गाने और सुननेवालों के मानस में उतरना और उतर कर भावों को उद्धीप्त करना। किन्तु मनुष्य की मानसिकता का एक नकरात्मक पक्ष है

(और नकारात्मक पक्षों की अपनी विनाशकारी शक्ति है) कि गीतों में यदि राम, यीशू, ख़ुदा या ऐसा कोई अन्य नाम है तो उन गीतों को प्रार्थना की संज्ञा तो दी जाती है पर साथ ही उन्हें किसी देवविशेष, किसी धर्मविशेष से और मात्र उस एक नाम, एक धर्म की स्तुति से जोड़ दिया जाता है। 'यह भ्रमजाल है' - इस सत्य को सदियों पूर्व भी महान संतों ने सामने रखा, आज भी रखते हैं - फिर भी लोग इस जाल को तोड़ते नहीं, बल्कि निरंतर बुनते हैं - धागा भी उनका, करघा भी उनका, बुनकर भी वे, आयोजन भी उनका - मिथ्या की माया होती ही ऐसी है।

इस बिंदु पर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि 'तो फिर प्रार्थना है क्या? यदि वह मात्र गीत है तो क्या हर गीत प्रार्थना है? किसी गीत में वह विशेष तत्व क्या है कि वह गीत से प्रार्थना बन जाता है? उत्तर है - कि हर गीत प्रार्थना नहीं है (वैसे प्रस्तुत समय में गीत कहे जानेवाले गीत भी गीत नहीं हैं)। गीत और प्रार्थना में विधा का अंतर नहीं है। अंतर है तो बस, दोनों के भाव, रस और प्रभाव में पर यह अंतर भी हमारी सोच पर आश्रित है। एक पत्थर को तिलक लगाने से यदि वह ईश्वर हो जाता है तो किसी गीत के अर्थ के माथे पर लगा हमारी भावना की स्वीकृति का चंदन-बिंदु उसे प्रार्थना बना देता है।

प्रार्थना मन की अक्षय शक्तियों को ब्रह्मानन्द सहोदर संगीत के अनहद नाद से जगाने वाला निराकार, रमता शब्द-योगी है, अन्तर की उपत्यकाओं को धोनेवाला निर्मल पानी है। प्रार्थना और कुछ नहीं, केवल शब्दों की शक्ति है जिसका गायन और श्रवण अंतर की उन शक्तियों को जगाता है, जो हमारे भीतर होती हैं पर हम उन्हें नहीं जानते। शब्द की शक्ति व्याकरण का भी अध्याय है इसलिए इसकी प्रामाणिकता का आधार भी सर्वथा वैज्ञानिक है और यह शक्ति भावों से जुड़ती है अतः, आधार जितना वैज्ञानिक है, उतना ही आत्मिक और आध्यात्मिक भी है। किसी को पुकारने के लिए नाम की आवश्यकता होती है, तो अंतर्मन को आवाज़ देने के लिए भी नाम चाहिए होता है और प्रार्थना-गीतों में आनेवाले नाम किसी देव विशेष के लिए नहीं, हमारे लिए होते हैं। राम, कृष्ण, जीसस, बुद्ध, महावीर, अल्लाह, मोहम्मद, नानक, बहा, सरस्वती या दुर्गा कहकर हम किसी और को नहीं पुकारते, बल्कि अपना अलख जगाते हैं और जो अपना अलख जगाकर स्वयं को पा लेता है, वह अपनी दुर्बलताओं को पराजित कर, अहम् और अहंकार से परे, 'अहं ब्रह्मास्मि' की शुचिता को पा लेता है। यदि यह सच नहीं होता तो शारीरिक असमर्थताओं के मारे हुए लोग संपूर्ण विश्व के आगे अद्‌भुत दृष्टान्त बनकर नहीं

खड़े होते; नेपोलियन ने आल्प्स पर्वत की असंभव चढ़ाई नहीं तय की होती, सैकड़ों वर्षों की गुलामी को गाँधी ने हथियारों की मुख़ालफत और अमन की ताक़त से करारी शिकस्त देकर अंग्रेज़ों को वापस न भेजा होता, हेलेन केलर की जीवनी मानव -समुदाय को मुक्तिद्वार के मार्ग का पता देकर नहीं जाती।

हर शक्ति ईश्वर है अर्थात् शक्ति का विद्युत केन्द्र है और प्रार्थना-गीतों की शब्द-शक्ति इस केंद्र को चालित करने की ऊर्जा है; इस ऊर्जा को जाग्रत और संकलित करने की स्वर-प्रक्रिया हैं। इसका किसी धर्म से जोड़ा जाना इसकी मांगलिक संभावनाओं पर प्रश्नचिह्न है, उसके श्रीकर स्वरूप को कम करता है और मनुष्य के आगे मार्ग और संप्रदाय की दीवारें उठाता है जिसके पार कभी किसी को कुछ नहीं दिखाई देता क्योंकि ऐसी दीवारें पूर्वाग्रहों से ग्रसित होती हैं, वे अपने सिवा सबको व्यर्थ मानती हैं।

'अश्वत्थ' का उद्देश्य है कि उसके निवेदन गीत आपको किसी प्रान्त, जाति, भाषा या धर्म विशेष के साथ नहीं जोड़े बल्कि इन्हें आद्यन्त देख, पढ़ और गाकर मन किसी सकारात्मक बिन्दु का स्पर्श करे, मन के दर्पण में प्रार्थना के सही और निस्सीम अर्थ की छवि उतरे क्योंकि इस छवि की वारिदी शक्ति दर्पण पर कभी धूल जमने नहीं देती। प्रार्थना हमारे माथे पर गिरी अश्वत्थ की शीतल छाँव है जो 'सर्वात्मने नमः' है तो 'नारायणी नमोस्तुते' है; 'श्रीगुरूवे नमः' है तो 'असतो मा सद्गमय' है, पंचतत्वों की अभ्यर्थना है तो 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु' की कामना है; प्रार्थना अंतर में बसा पुण्यसलिला का संजीवनी गाँव है; प्रार्थना किसी और को नहीं, स्वयं को किया गया नमस्कार है, आत्मा को दिया गया सत्कार है - अपने आप से पूछ कर देखें कि क्या इस नमस्कार और सत्कार का पारस स्पर्श उसे वांछित नहीं है?

इस संग्रह में इकबाल का कौमी-तराना, 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' कारगिल युद्ध के विजय-अभियान में हुए हादसों और मिली जीत के बाद फौजियों की नेक हस्ती से जोड़ा गया है तो 'हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं' जैसे प्रसिद्ध गीत को अनेक भाषाओं के साथ संयोजित किया गया है।'Such a feeling is coming over me' और 'खाली बादलों से है जो आसमां' को एक गीत का रूप मिला है तो कबीर की साखियों और रहीम के दोहों की संधि की गई है।

निर्माण और प्रगति की मुख्यधारा का प्रतीक है चलचित्र जिसके साथ अपने समय के महान साहित्य-शिल्पी जुड़े रहे हैं इसलिए हिन्दी चलचित्रों के गीतों की

उत्कृष्टता अन्यत्र दुर्लभ है। इस साहित्य के कुछ विशिष्ट कालजयी पृष्ठों को भी अश्वत्थ में स्थान मिला है।

संग्रह के विभिन्न खंड हैं पर उनकी विभिन्नता में एकरूपता रखने की कोशिश की गई है क्योंकि यह हमारी भारत-भूमि की शाश्वत छवि है। इसकी कुछ शाखाएँ प्राचीन हैं, कुछ नवीन हैं तो कुछ नवविकसित हैं और लगभग सब अपनी धुनों में संयोजित हैं। इसलिए अनुरोध है कि इनमें से किसी की प्रस्तुति हेतु संबद्ध व्यक्ति या संस्था कृपया संपर्क करे और मौलिक रचनाओं का व्यावसायिक प्रयोग बिना अनुमति न करे।

यह संग्रह अपना स्वागत किए जाने की अपेक्षा नहीं रखता, अपितु हाथ जोड़कर हर दृष्टि और स्वर-स्पर्श का आतिथेय बनकर, उन्हें अपने मणिकर्णिका घाट पर कुछ पल ठहरने का आग्रह करता है ताकि अश्वत्थ की छाँव में विश्रामहेतु ठहरे दिनमानों को अस्ताचल से पूर्व सुजातागढ़ की ठौर मिले, सुजाता के मानसबोध का वरद हस्त मिले और मिले - बुद्ध के मध्यम मार्ग-सम महाबोधि ज्ञान-चक्षुओं की कालजयी क्षमता का दिव्य वरदान।

◆◆◆

गीतक्रम

राष्ट्र गान 11
वंदे मातरम 12
तक्षशिला गान 13
श्रुतवेद 15
सूर्य 16
चन्द्र 16
मंगल 16
बुध 16
गुरू 16
शुक्र 17
शनि 17
प्रातः वन्दना 17
कार्य समर्पणम् 17
गायत्री मंत्र 18
कल्याण स्तुति 18
शक्ति स्तुति 18
वाणी स्तुति 18
निर्वाणस्तोत्र 19
श्री गंगाष्टकम् 20
न तातो न माता 20
ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं 21
गुरु वंदना 23
विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं 24
ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलस्फटिकाकृतिम् 24
गुरु गोविंद दोऊ खड़े 25
मोरे घर आए 25
हमरे गुरु पूरन दातार 26
मोहे लागी लगन 26
साक्षरता गीत 26
गुरुजी के बहिया में 27
भक्ति, अद्वैत, रहस्य-सौंदर्य 29
जय जय भगीरथ नन्दिनी 30
सुमिरन कर लो मेरे मना 30
मने चाकर राखोजी 31
मत कर तू अभिमान रे बन्दे 31
नाम को आधार 31
राम रतन धन पायो 32
माई री मैं तो लियो 32
साँवर बरन मृगलोचन 33
तुम आशा विश्वास हमारे 33
उषा का आभास है 34
जैसे सूरज की गरमी से 34
ना मैं जानूँ आरती वंदन 35
रंग दे चुनरिया 35
ना मैं धन चाहूँ 36
प्रभु! मेरे अवगुण चित्त न धरो 36
हे निर्गुन! 37
ऊधो मोहन-मोह न जावै 37
तू ही मेरे रसना 38
आज दिवस लेऊँ बलिहारा 38
अब कैसे छुटै 39
मानुष हौं तो 39
बीत गये दिन 40
हे निर्गुन 40
बंदौ चरन सरोज 41
अबके माधव 41
अब लौं नसानी 42
भज मन रामचरन 42
एकेदंता गजाननम् 43
ऐ मालिक तेरे बंदे हम 43
तुम्हीं हो माता 44
इतनी शक्ति हमें देना दाता 45
हमको मन की शक्ति देना 45
तुम राम कहो 46
नंदनंदन बिलमाई 46
शक्ति को नमन करो 47
मन मस्त हुआ तो क्यों बोले 47

हौं कुरबाने जाउँ पियारे 48
मुरसिद मेरा मरहमी 48
काहे रे बन खोजन जाई 48
सतगुरु है सत पुरुष अकेला 49
बाबुल कैसे बिसरा जाई 49
गंगा आए कहाँ से 49
ऊपर गगन विशाल 50
इतने प्यारे दिन 51
तुम मुझमें प्रिय 52
हरी-हरी वसुन्धरा 53

देश-वंदना 55

चिश्ती ने जिस ज़मीं पर 56
हिमाद्रि तुंग शृंग से 56
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा 57
अरूण यह मधुमय देश 58
हिन्द देश के निवासी 58
मेरे वतन से अच्छा 60
मेरा रँग दे बसंती चोला 60
ऐ मेरे वतन के लोगो 61
सुंदर सुभूमि भइया 63

प्रकृति, प्रभात, सृष्टिबोध, उत्सव - रंग 65

ज्योति कलश छलके 66
तरूण अरूण से रंजित 66
भयो प्रभात 67
बीती विभावरी, जाग री 68
जग उजियारा छाए 68
ओरे गृहो बाशी 69
मेहुलो गाजेने 69
ओ नोदी रे 70
आदि कुदरत, अन्त है कुदरत 70
खेलो-खेलो नंदलाला 71
होरी खेलत हैं गिरधारी 71
पावस रितु बृन्दावनकी 72
मारो मारो हो स्याम 72

सूफियाना, साखी, ज्ञान-दर्शन 73

छाप तिलक सब छीनी 74
सूरत के बलिहारी 74
दमादम मस्त कलंदर 74
बहुत रही बाबुल घर 75
ओ चितेरे! 76
प्रेमनगरके माहिं होरी 77
वाँ शाह वजीरी है 77
है राग उन्हीं के रंग भरे 78
बहुत कठिन है डगर पनघट की 79
फाग खेलन कैसे जाऊँ 80
हौं तो खेलौं पियासंग होरी 80
परबत बाँस मँगाव 81
सात समंद की मसि करौं 81
दोहा संधि 81
झीनी झीनी बीनी चदरिया 82
फागुनके दिन चार 83
जो नर दुखमें 83
ना वह रीझै जप तप 83
साधो निंदक मित्र हमारा 84
सबसो ऊँची प्रेम सगाई 84
घूँघटका पट खोल री 85
रस गगन गुफामें 85
अगर है शौक 85
टुक बूझ कवन छप 86
माटी खुदी करेंदी 86
हिंदू कहैं सो हम बड़े 87

प्रयाण, उद्‌बोधन, प्रेरणा, संकल्प 89

बढ़ता चल 90
उड़ा पाल माँझी 90
साथी हाथ बढ़ाना 91
यौवन चलता सदा गर्व से 91
हम पंछी एक डाल के 92
हमें उन राहों पर चलना है 92
वर दे वीणा वादिनी वर दे 93
लब पे आती है दुआ 93
मैं गरीबों का दिल हूँ 94

मैं हूँ भारत की नार 94
आतिशी बुलंदी 95
तुमको देती है सुनाई 96
मेरे नदीम, मेरे हमसफर 96
धरती कहे पुकार के 97
तुम आज मेरे संग हँस लो 98
बच्चो तुम तकदीर हो 98
आने वाले कल की तुम तस्वीर हो 100
देश हमारा, धरती अपनी 100
माता जाह्नवी तू हमें 101
इन्द्रधनुषी प्रार्थना 103
जैन प्रार्थना 104
जो देवों का देव 104
सव्वं जगं 104
वाया दुरुत्ताणि 104
अप्पा चेव 104
बौद्ध प्रार्थना 105
घबराये जबमन 105
इस्लामी प्रार्थना 106
व अल नबलू बशी 106
व लतकुन्न, मिन्नकुम 106
इननतलाहा ला यो हिब्बुल 107
करती हूँ हम्द उसकी 107
गरज-बरस प्यासी धरती 107
जो भूल चुके हैं हम 108
ईसाई प्रार्थना 109
पारसी प्रार्थना 110
बहाई प्रार्थना 111
गाँधी स्मृति 113
रघुपति राघव राजा राम 114
वैष्णव जन तो तेने कहिए 114
वह अमरगीत का गायक था 115
दे दी हमें आज़ादी 115
रजत सूत्र 117
ऐसा देश कहीं न देखा 118
माता-पिता 118
माँ को समर्पित 119
पिता के नाम 120
राखी बस कुछ सूत नहीं 121
मौसम के रंग हाथों में 121
बैठी सगुन मनावति 122
कन्या गीत 122
पुनरागमन 123
जन्मोत्सव-गीत 123
English Songs 125
All Things Bright and Beautiful 126
Make Me a Channel 126
In Need of Liberation 127
Prayer for Peace 127
Pit Pit Patter 128
Give Me Oil In My Lamp 128
God Make My Life 128
Walking with The Lord 129
Little Drop of Water 129
God made the Earth 130
Dawn it is Breaking 130
We Shall Overcome 131
One Autumn Morn 131
Father, we thank Thee 132
When the mists have rolled 132
No man is an Island 133
There are numerous strings 133
Behold our family 133
Blessed with Life and Light 134
Grant that We Here 135
Let us Strive 135
Where the Mind is without Fear 136

राष्ट्र गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़ उत्कल बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय-गाथा
जन-गण-मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

◆◆◆

वंदे मातरम

वंदे मातरम्। वंदे मातरम् ॥
सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्।
शस्य-श्यामलां मातरम् ॥
वंदे मातरम्।
शुभ्र ज्योत्सनां - पुलकित यामिनीम्।
फुल्लकुसुमित - द्रुमदल शोभिनीम् ॥
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्।
सुखदां वरदां मातरम् ॥
वंदे मातरम्।
त्रिंशकोटिकंठ - कलकल - निनाद कराले।
द्वित्रिंशकोटिभुजैर्धृतखरकरवाले ॥
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम् ॥
रिपुदलवारिणीं मातरम्।

◆◆◆

तक्षशिला गान

उतरे जन-मन के आँगन में ज्ञान किरण उतरे
ज्योति कलश सूरज-सा छलके प्रभा-पुंज बिखरे

सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा
रस रोशनी विनिर्मित संस्कृति भारत की अपनी
बन कर यह आलोक पर्व-सा अग-जग में फैले

संगच्छध्वं संवदध्वं संवोमनांसि जानताम् वसुधैव कुटुम्बकम्।
वसुधा ही कुटुम्ब है अपना ऐसा भाव बने
जन-मन-के सब भेद मिटे और समता प्रेम बढ़े
नव मानव के सृजन यज्ञ के हम ऋत्विज सारे
संस्कृति शिल्पी चित्त गढ़ेंगे हम न्यारे-न्यारे
तक्षशिला और नालंदा के वारिस हैं हम
आत्मदीप बनने की प्रेरणा जन-मन में भर दें
ज्ञान दीप्त हो चित्त, हृदय में श्रद्धा सजल भरें
विज्ञानी मस्तिष्क मांगलिक प्रज्ञा वरण करें।

सा विद्या या विमुक्तये
मुक्त चित्त की प्रेरक विद्‌या जग को दान करें
सब संस्कृति मानव की संस्कृति ऐसा भाव भरें

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
श्रद्धा पूरित चित्त के सारे बंद कपाट खुलें
दिशा-दिशा से सद्‌विचार के ज्योति विहग उतरें
शुद्ध-बुद्ध हम चिदानंदमय आत्मरूप हम नित्य
विमल शील चारित्र्य धनी हम यह संकल्प करें।

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतंगमय।

हम तम पर आलोक विजय का उत्सव मधुर रचें
राष्ट्र प्रेम और विश्व शांति की पावन ऋचा रचें
विद्या भूषित जीवन सबका बने ललित संगीत
सविता तेज सुप्रेरित दर्शन चिंतन दृष्टि रचें
हम भारत के गौरव सारी वसुधा की आशा
विश्व ग्राम के हम अधिवासी हम सबके सब अपने।

वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः।

◆◆◆

श्रुतवेद

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि

नैनं दहति पावकः

न चैनं क्लेदयन्त्यापो

न शोषयति मारुतः

◆◆◆

सूर्य

ऊँ श्री सूर्याय नमः
पद्मप्रभ जिनेन्द्रस्य नामोच्यरेण् भास्कर,
शान्तिय् तुष्टिय तुष्टिय आमकरू जयश्रियम्

चन्द्र

ऊँ श्री चन्द्राय नमः
चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रस्य नाम्ना तारागणाधियाः
प्रसन्नो भव शान्तिय, रक्षा कुरू जयश्रियम्।।

मंगल

ऊँ श्री मंगलाय नमः
सर्वदा वासुपूज्यस्य नाम्नो शांति जयश्रियम्
रक्षा कुरू धरा सुनो! अशुभाजिय शुभो भव्।

बुध

ऊँ श्री बुधाय नमः
विमलानन्त धर्माराः शान्तिः कुंथर्नभिस्तथाः
महावीरस्य तन्नाम्ना शुभोभव सदाबुधा।

गुरू

ऊँ गुरूवे नमः
भृषयाजितसुपार्श्वश्चाभिनन्दनशीतलौ
सुयातिः संभवः स्वामी, श्रेयांसश्य जिनोत्तमा।।
एततीर्थकृता नाम्ना, पूजया च शुभो भवः
शांति तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरू देवगणार्चित ।।

शुक्र

ऊँ श्री शुक्राय नमः
पुष्पदंत जिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चितः
प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरू जयश्रियम्।।

शनि

ऊँ श्री शनिश्चराय नमः
श्री सुव्रत जिनेन्द्रस्य, नाम्नां सूयांग सम्भव
प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरू जयश्रियम्

◆◆◆

प्रातः वन्दना

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमूले सरस्वती।
करमध्ये तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥

अध्ययनात् प्राक्

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

शयनसमये क्षमापणम्

करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽवापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो ॥

कार्य समर्पणम्

कायेन वाचा मनसैन्द्रियैर्वा
बुद्धयात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यत्यद् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि।।

गायत्री मंत्र

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

कल्याण स्तुति

सर्वबाधा प्रशमनम् ओम् नमः शिवाय
''कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं।
सदा बसन्तं हृदयारं बिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥''

शक्ति स्तुति

ऊँ श्री दुर्गाय नमः
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥
ब्रह्मरूपे सदानन्दे परमानन्द स्वरूपिणि
द्रुत सिद्धि प्रदे देवि, नारायणि नमोस्तुते ॥
शरणागत दीर्नात परित्राण परायणे
सर्वस्यातिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥

वाणी स्तुति

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणा पुस्तकधारिणीमभयदां जाडयान्धकारापहाम् ॥
हस्ते स्फटिकमलिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां।
वन्दे तां परमेश्वरी भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाडयापहा ॥ 6 ॥

निर्वाणस्तोत्र

मनो बुद्ध्यहंकार चित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायु
श्चिदानंदरूपः शिवोऽहंशिवोऽहम् ॥

न च प्राणसंज्ञो न बै पंचवायुर्नवा
सप्तधातुर्न वा पंचकोषाः।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायु
श्चिदानंदरूपः शिवोऽहंशिवोऽहम् ॥

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ॥
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष
श्चिदानंदरूपः शिवोऽहंशिवोऽहम् ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थं न देवा न यज्ञाः।
अहं भोजनम् नैव भोज्यं न भोक्ता
श्चिदानंदरूपः शिवोऽहंशिवोऽहम् ॥

न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरूर्नैव शिष्य
श्चिदानंदरूपः शिवोऽहंशिवोऽहम् ॥

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चासंगतं नैव मुक्तिर्न मेय
श्चिदानंदरूपः शिवोऽहंशिवोऽहम् ॥

◆◆◆

श्री गंगाष्टकम्

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं
विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि।
सकलकलुषभंगे स्वर्गसोपानसंगे
तरलतरतरंगे देवि गंगे प्रसीद ॥ 1 ॥

भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः
कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति
अमरनगरनारीचामरग्रहिणीनां
विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ 2 ॥

ब्रह्मांड खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्खलन्ती
क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूर्निर्भरं भर्त्सयन्ती
पायोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी नः पुनातु ॥ 3 ॥

मज्जन्मातंगकुम्भच्युतमदमदिरामोदमत्तालिजालं
स्नानैः सिद्धांगनानां कुचयुगविलगलत्कुकुमासंगपिंगम्।
सायंप्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छन्नतीरस्थनीरं
पायान्नो गांगमम्भः करिकलभकराक्रान्तरंहस्तरंगम् ॥ 4 ॥

आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्शेरियं
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते ॥ 5 ॥

न तातो न माता

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 1 ॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः

पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं। गतिस्त्वं ॥ 2 ॥
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्। गतिस्त्वं ॥ 3 ॥
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं ॥ 4 ॥
कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सहादम् गतिस्त्वं ॥ 5 ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः। शान्तिः!

◆◆◆

गुरु वंदना

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

◆◆◆

राम तजूँ, गुरु को न बिसारूँ,

गुरु के रहे, हरि को न निहारूँ।

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।
यः साक्षी कुरूते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं।
तस्मै श्रीगुरूमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥
बीजस्यान्तरिवाङ्कुरोर्जगदिदं प्राङ्निर्विकल्पं
पुनर्मायाकल्पितदेशकालकलनावैचित्र्यचित्रिकृतम्।
मायावीव विजृम्भयत्यपि महायोगीव चः स्वेच्छया
तस्मै श्रीगुरूमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥
यस्यैव स्फुरणं सदात्मकमसत्कल्पार्थकं भासते।
साक्षातत्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान् ॥
यत्साक्षात्करणाद्भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ।
तस्मै श्रीगुरूमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥

◆◆◆

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलस्फटिकाकृतिम्

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलस्फटिकाकृतिम्।
आधारं सर्वभूतानां हयग्रीवमुपास्महे ॥
गुरुवे सर्वलोकानां भिशजे भवरोगिणाम् ॥
निधये सर्वविद्यानां दक्षिणामूर्तये नमः ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ॥
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं
ज्ञानस्वरुपं निजबोधयुक्तम् ॥
योगेन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं
श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥

◆◆◆

गुरु गोविंद दोऊ खड़े

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपणों, जिन गोविंद दियो बताय ॥

सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपकार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार ॥

सतगुरु के सदकै करुँ, दिल अपणीं का साछ।
कलियुग हम स्यूँ लड़ि पड़या, मुकहम मेरा बाछ ॥

हँसै न बोलै उनमनीं, चंचल मेल्ह्या मारि।
कहे कबीर भीतरि विद्या, सतगुरु कै हथिहारी ॥

सतगुरु साँचा सूरिवाँ, तातैं लोहि लुहार।
कसणी दे कंचन किया, ताई लिया ततसार ॥

हरि है खांड, रेत महि बिखरी, हाथी चुनि न जाई।
कहे कबीर गुरु भली बुझाई, चीटीं होई कै खाई ॥

◆◆◆

मोरे घर आए

मोरे घर आए हजरत निज़ामुद्दीन औलिया।
हे गुरु, तुमको कहाँ बिठाऊँ,
कैसे करुँ इबादत तेरी?
साहिब होता, तो आसां था,
तुम तो हो निज़ामुद्दीन औलिया।
मोरे घर आए 1

◆◆◆

हमरे गुरु पूरन दातार

हमरे गुरु पूरन दातार।
अभय दान दीनन को दीन्हें, कीन्हें भव जल पार ॥
जन्म-जन्मके बंधन काटे यमको बंध निवार।
रंकहुते सो राजा कीन्हें, हरि-धन दियो अपार ॥
देवैं ज्ञान भक्ति पुनि देवैं, योग बतावनहार।
तन मन बचन सकल सुखदाई, हिरदे बुधि उजियार ॥
सब दुख गंजन पातक भंजन रंजन ध्यान बिचार।
साजन दुर्जन जो चलि आवै, एकहि दृष्टि निहार ॥
आनंदरूप स्वरूपमयी है, लिप्त नहीं संसार।
चरनदास गुरू सहजो केरे, नमो-नमो बारंबार ॥

◆◆◆

मोहे लागी लगन

मोहे लागी लगन गुरू-चरणनकी।
चरण बिना कछुवै नहि भावै जगमाया सब सपननकी।।
भौसागर सब सूख गयो है फिकर नहीं मोहे तरननकी।
मीराके प्रभु गिरधर नागर आस वही गुरु-सरननकी।।

◆◆◆

साक्षरता गीत

शिक्षा बिना नहीं कोई जीवन का अर्थ है
सच केवल ज्ञान-धन, बाकी धन व्यर्थ है
अपना बनाकर तो देखो किताबों को
पूरा कर पाओगे तुम अपने ख्वाबों को
एक और एक बस, जीवन की शर्त है
शिक्षा की नाव करो, शिक्षा कैवर्त है।

गुरुजी के बहिया में

धिया जात रहली अब धनिया भी जइहन।
गुरूजी के बहिया में नमवा लिखइहन।
सँझिया किलास करे बाप काका जायलन
लिखे बिना नाम आपन रोटी नाही खायलन
सबलोग पढ़िहन त सबके पढ़इहन
गुरुजी के बहिया में नमवा लिखइहन।

◆◆◆

भक्ति, अद्वैत, रहस्य-सौंदर्य

जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर-भीतर पानी।
फुटा कुंभ, जल जल ही समाना सत ये बतावे ज्ञानी ॥

◆◆◆

जय जय भगीरथ नन्दिनी

जय जय भगीरथ नन्दिनी, मुनिचय चकोर चन्दिनि,
नर नाग विबुध बन्दिनि, जय जह्नु बालिका ॥ ध्रुप ॥
बिस्नु पद सरोज जासि ईस सीसपर बिभासि,
त्रिपथगासि, पुन्यरासि, पापछालिका ॥ 1 ॥
बिमल बिपुल बहसि बारि, सीतल त्रयतापहारि,
भँवर बर बिभंगतर तरंगमालिका ॥ 2 ॥
पुरजन पूजोपहार, सोभित ससि धवलधार,
भंजन भव भार, भक्तिकल्पथालिका ॥ 3 ॥
निज तटबासी बिहंग, जल थल चर पशु पतंग,
कीट, जटिल तापस सब सरिस पालिका ॥ 4 ॥
तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुबंसबीर,
बिचरत मति देहि मोह महिषकालिका ॥ 5 ॥

◆◆◆

सुमिरन कर लो मेरे मना

सुमिरन कर लो मेरे मना।
तेरे बीति उमर, हरिनाम बिना ॥
कूप नीर बिनु, धेनु छीर बिनु, धरती मेह बिना।
जैसे तरूवर फल बिन हीना, तैसे प्राणी हरिनाम बिना ॥
देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन मन्दिर दीप बिना।
जैसे पंडित वेद बिहीना तैसे प्राणी हरिनाम बिना ॥
काम क्रोध मद लोभ निहारो छोड़ देहि अब संतजना।
कहै नानकशा, सुन भगवंता या जग में नहि अब रहना।

◆◆◆

मने चाकर राखोजी

मने चाकर राखोजी।
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ नित उठि दरशन पासूँ।
वृन्दावन की कुंजगली में तेरी लीला गासूँ ॥ मने ॥
हरे हरे सब वन्य बनाये बिच बिच राखो बारी।
साँवलिया के दर्शन पासूँ पहन कुसुम्मी सारी ॥ मने ॥
योगी आया योग करन को तप करने सन्यासी।
हरि भजन को साधु आया वृन्दावन के वासी ॥ मने ॥
मीरा के प्रभु गहिर गंभीरा ह्रदय रहो जी धीरा।
आधिरात प्रभु दर्शन दैहें प्रेम नदी के तीरा ॥ मने ॥

◆◆◆

मत कर तू अभिमान रे बन्दे

मत कर तू अभिमान रे बन्दे।
झूठी तेरी शान रे बन्दे ॥
तेरे जैसे लाखों आये, लाखों इस माटी ने खाये
रहा ना नाम निशान रे बन्दे ॥ मत कर .
झूठी माया झूठी काया, वो ही तेरा जस हरिगुण गाया
जप ले हरि, का नाम रे बन्दे ॥ मत कर
तेरे पास में हीरे मोती, मेरे मन मंदिर में ज्योति
कौन हुआ धनवान रे बन्दे ॥ मत कर .

◆◆◆

नाम को आधार

नाम को आधार, तेरे नाम को आधार ॥
मेरी-मेरी करत फिरत, दिनहि रैन सारा रे।
नजर भर के देखो प्राणी, झूठ को पसारा रे।

नाम को आधार ॥
जमुना में गेंद गिरी, ग्वाल बाल हारा रे।
काली नाग नाथ लीन्हों, कृष्ण भयो कारा रे।
नाम को आधार ॥
राजबलि के द्वार ठाड़ो, वामन रूप धारा रे।
बीस भुजा रावण की, छिन में काट डारा रे।
नाम को आधार ॥
मथुरा में जन्म लीन्हों गोकुल सिधारा रे।
कंस को निरवंश कीन्हों मोर मुकुट धारा रे।
नाम को आधार ॥

◆◆◆

राम रतन धन पायो

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरू, किरपा कर अपनाओ ॥
जनम जनम की पूँजी पायी, जग में सभी खोवायो।
खरच ना खूटे, चोर ना लूटे, दिन-दिन बढ़त सवायो ॥
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव सागर तरि आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो ॥

◆◆◆

माई री मैं तो लियो

माई री मैं तो लियो गोबिंदो मोल।
कोई कहे छाने, कोई कहे छुपके, लियोरी बजंता ढोल ॥ 1 ॥
कोई कहै मुँहघो, कोई कहे सुहँघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहे कालो, कोई कहे गोरो, लियोरी अमोलक मोल ॥ 2 ॥
कोई कहै घरमें, कोई कहै बनमें, राधाके संग किलोल।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेमके मोल ॥ 3 ॥

साँवर बरन मृगलोचन

साँवर बरन मृगलोचन भवानी के डेरा कत छन हे?
मइया दुअरिया चनन क रे गछिया,
मह-मह करे सारी रतिया भवानी के डेरा ओत छन हे।
मइया दुअरिया गुगुल क रे गछिया
झिर-झिर-बहे सारी रतिया भवानी के डेरा ओत छन हे।

◆◆◆

तुम आशा विश्वास हमारे

नाम न जाने धाम न जाने, जाने न सेवा पूजा
जाने बस इतना जाने हम, एक बिना नहीं दूजा।
तुम आशा विश्वास हमारे, तुम धरती आकाश हमारे रामा।
तात मात तुम, बंधु भ्रात हो, दिवस रात्रि, संध्या प्रभात हो।
दीपक, सूर्य, चन्द्र तारक में रामा, तुम ही ज्योति प्रकाश हमारे।
सांसों में तुम आते-जाते, एक तुम्ही से हैं सब नाते,
जीवन वन के हर पतझड़ में रामा, तुम ही मधुमास हमारे।
तुम ही सब में, हैं तुममें सब, तुम ही भव हो, हो तुम ही रब।
अश्रु हमारी आँखों में तुम रामा, तुम होठों पर आस हमारे।

◆◆◆

तू प्यार का सागर है, तेरी इक बूँद के प्यासे हम,
लौटा जो दिया तूने, चले जाएँगे जहाँ से हम
तू प्यार....।
घायल मन का पागल पंछी, उड़ने को बेकरार
पंख हैं कोमल, आँख है धुँधली, जाना है सागर पार
अब तू ही इसे समझा, राह भूले थे कहाँ से हम,
तू प्यार....।
इधर झूम के गाए ज़िन्दगी, उधर है मौत खड़ी,
कोई क्या जाने, कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी

कानों में ज़रा कह दे, कि आएँ कौन दिशा से हम
तू प्यार का सागर है।

◆◆◆

उषा का आभास है

उषा का आभास है, मन में विश्वास है,
तू है तो जग है ये धरती, आकाश है।
नित्य की प्रार्थना हो, तेरी आराधना हो,
जीने का अर्थ है जब, जीवन साधना हो,
सृष्टि की सारी आभा, तेरा प्रकाश है,
तू है तो जग है।
अंतर में तेरी प्रतिमा, जैसे तिमिर में ज्योति,
सिंधु के अंतस्तल में, सीपी में बंद हो मोती,
हमसब तुम्हारी रचना, तू संगतराश है,
तू है तो जग है।

◆◆◆

जैसे सूरज की गरमी से

जैसे सूरज की गरमी से जलते हुए तन को मिल जाए तरुवर की छाया,
ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है, मैं जब से शरण तेरी आया,
....मेरे राम!
भटका हुआ मेरा मन था कोई, मिल ना रहा था सहारा,
लहरों से लड़ती हुई नाव को जैसे मिल ना रहा हो किनारा
उस डगमगाती हुई नाव को ज्यों किसी ने किनारा दिखाया
ऐसा ही सुख ....मेरे राम!
शीतल बने आग चंदन के जैसी, राघव कृपा हो जो तेरी,
हो जाएँ पूनम की उजियारी रातें, जो थीं अमावस अँधेरी
युग-युग की प्यासी मरुभूमि ने जैसे सावन का संदेश पाया
ऐसा ही सुख ....मेरे राम!

ना मैं जानूँ आरती वंदन

ना मैं जानूँ आरती वंदन, ना पूजा की रीत।
मैं अनजानी, दरस दीवानी, मेरी माधव प्रीत ॥
लिए री मैंने, दो नैनों में, सपने लिए सँजोए।
हेरी मैं तो प्रेमदीवानी मेरा दरद ना जाने कोय ॥
दिन डूबा तारे मुरझाए, सिसक-सिसक गई रैन।
बैठी सूना पंथ निहारूँ, झर-झर बरसै नैन ॥
मेरो मनमोहन आए ना सखी री रो-रो नैना खोए।
घायल की गति घायल जाने, और न जाने कोए ॥
सूली-ऊपर सेज हमारी, सोवण किस बिध होय।
गगन मंडल पर सेज पियाकी, किस बिध मिलणा होय ॥
दरद की मारी बन-बन डोलूँ, बैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटे, जद बैद साँवलिया होय।

◆◆◆

रंग दे चुनरिया

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया
बिना रँगाए मैं तो घर नहीं जाऊँगी,
बीत ही जाए चाहे सारी उमरिया। श्याम. . . . . ।
ऐसी रँगाए कि रंग नाही उतरे,
धोबिनिया धोये चाहे सारी उमरिया। श्याम. . . . . ।
रंग रंगीनाथ के ऐसी रँगी मीरा
मेरो मुख झाँकत, मोरे साँवरिया। श्याम . . . . ।

◆◆◆

ना मैं धन चाहूँ

ना मैं धन चाहूँ, ना रतन चाहूँ
तेरे चरणों की धूल मिल जाए
तो मैं तर जाऊँ हे श्याम तर जाऊँ, हे राम तर जाऊँ।
मोह मन मोहे लोभ ललचावे
जाने कैसी ये लाग लहकावे
इससे पहले कि मन उधर जाए मैं तो मर जाऊँ हे राम . . ।
लाए क्या थे जो लेके जाना है
नेकदिल ही तेरा ख़ज़ाना है
साँझ होते ही पंछी आ गाए -
अब तो घर जाऊँ, अपने घर जाऊँ,
तेरे चरणों की . . . . ।
थम गया पानी जम गई काई
बहती नदिया ही साफ कहलाई
मेरे दिल ने ही जाल फैलाए, अब किधर जाऊँ,
मैं किधर जाऊँ . . . . ।

◆◆◆

प्रभु! मेरे अवगुण चित्त न धरो

प्रभु! मेरे अवगुण चित्त न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो।
एक नदिया एक नार कहावत मैलो ही नीर भरो।
जब दोउ मिलिकै एक बरन भये, सुरसरि नाम परो।
इक लोहा पूजा मे राखत, इक घर बधिक परो
पारस गुण-अवगुण नहिं चितवत, कंचन करत खरो।
एक जीव, इक ब्रह्म कहावत, सूरस्याम झगरो
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहि, पन जात टरो।

◆◆◆

हे निर्गुन!

हे निर्गुन! हे सर्वगुणाश्रय! हे निरुपम! हे उपमामय!
हे अरूप! हे सर्वरूपमय ! हे शाश्वत! हे शान्तिनिलय!
हे इति! आदि! अनादि! अनामय! हे अनन्त! हे अविनाशी!
हे सत्-चित्-आनन्द, ज्ञानघन, द्वैतहीन, घट-घट-वासी!
हे शिव, साक्षी, शुद्ध, सनातन, सर्वहरित हे सर्वाधार!
हे शुभमन्दिर, सुन्दर, हे शुचि, सौम्य, साम्यमति रहितविकार!
हे नव नीरद नील निराकृत, निराकार, हे नीराकार!
हे समदर्शी, संत-सुखाकर, हे लीलामय प्रभु साकार!
हे दुर्बलकी शक्ति, निराश्रय के आश्रय, हे दीनदयाल!
हे दानी, हे प्रणतपाल, हे शरणागतवत्सल जनपाल!

◆◆◆

ऊधो मोहन-मोह न जावै

ऊधो मोहन-मोह न जावै।
जब-जब सुधि आवति है रहि-रहि, तब-तब हिय बिचलावै ॥
बिरह-बिथा बेधति है उन बिन, पल छिन चैन न आवै।
काह करौं कित जाउँ कौन बिधि, तनकी तपनि बुझावै ॥
ब्याकुल ग्वाल-बाल अति दीखत, ब्रजबनिता घबरावै।
गाय-बाछ डोलत अनाथ सम, इत उत हाय, रँभावै ॥
कंसत्रास भीषण लखि सिगरो, धीरज छूटो जावै।
कौन बचाव करैगो, अब तो, यह दुख असह लखावै ॥
जबलौं अवधि कंस-गृह पूरी, करिकैं मोहन आवै।
तबलौं कौन उपाय करै हम, कोऊ नाहि बतावै ॥

◆◆◆

तू ही मेरे रसना

तू ही मेरे रसना तू हीं मेरे बैना।
तू ही मेरे स्रवना तू हीं मेरे नैना ॥ टेक ॥
तू ही मेरे आतम कँवल मँझारी।
तू ही मेरे मनसा तुम्ह परिवारी ॥ 1 ॥
तू ही मेरे मनहीं तू हीं मेरे साँसा।
तू ही मेरे सुरतैं प्राण निवासा ॥ 2 ॥
तू ही मेरे नख-सिख सकल सरीरा।
तू ही मेरे जिय रे ज्यूँ जलनीरा ॥ 3 ॥
तुम्ह बिन मेरे और कोइ नाही ॥
तू ही मेरे जीवनि दादू माँही ॥ ।4 ॥

◆◆◆

आज दिवस लेऊँ बलिहारा

आज दिवस लेऊँ बलिहारा।
मेरे घर आया रामका प्यारा ॥ टेक ॥
आँगन बँगला भवन भयो पावन।
हरिजन बैठे हरिजस गावन ॥ 1 ॥
करूँ डंडवत चरन पखारूँ।
तन-मन-धन उन ऊपरि वारूँ ॥ 2 ॥
कथा कहैं अरू अरथ बिचारै।
आप तरैं औरन को तारै ॥ 3 ॥
कह रैदास मिलैं निज दासा।
जनम जनमकै काटैं पासा ॥ 4 ॥

◆◆◆

अब कैसे छुटै

अब कैसे छुटै नाम रट लागी ॥ टेक ॥
प्रभुजी, तुम चन्दन, हम पानी।
जाकी अँग अँग बास समानी ॥ 1 ॥
प्रभुजी, तुम घन बन, हम मोरा।
जैसे चितवत चंद चकोरा ॥ 2 ॥
प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती।
जाकी जोति बरै दिन राती ॥ 3 ॥
प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ॥
जैसे सोनहि मिलत सुहागा ॥ 4 ॥
प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा।
ऐसी भगति करै रैदासा ॥ 5 ॥

◆◆◆

मानुष हौं तो

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँवके ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरिकौ, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरन्दर-कारन।
जो खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि, कालिंदी-कूल-कदम्बकी डारन ॥

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुरकौ तजि डारौ ॥
आठहु सिद्धि नवो निधि कौ सुख, नन्द की गाय चराय बिसारौ ॥
इन आँखिन सो रसखानी कबौ ॥, ब्रजके बन-बाग तड़ाग निहारौ ॥
कोटिक ही कलधौतके धाम, करीलके कुंजन ऊपर बारौ ॥
. . . . राग - मालश्री
सेस, महेस, गनेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरन्तर गावै ॥
जाहि अनादि, अनन्त, अखण्ड, अछेद, अभेद सुबेद बतावै ॥
नारद-से सुक ब्यास रटैं, पचिहारै, तऊ पुनि पार न पावै ॥
ताहि अहीरकी छोहरियाँ, छछिया भरी छाछपै नाच नचावै ॥

. . . . राग - नारायनी

खंजन-नैन फँसे पिंजरा-छबि, नाहिं रहैं थिर कैसेहूँ माई!
छूटि गयी कुल कानि सखी, रसखानी लखी मुसुकानि सुहाई ॥
चित्र-कढ़े-से रहैं मेरे नैन, न बैन कढ़ै, मुख दीनी दुहाई।
कैसी करौं, जिन जाव अली, सब बोलि उठैं, यह बावरी आई ॥

. . . . राग - केदारा

कानन दै अँगुरी रहिबो, जबहीं मुरली-धुनि मन्द बजैहों;
मोहिनी-तानन सों रसखानि, अटा चढ़ि गोधन गैहों तौ गैहों ॥
टेरि कहौं सिगरे ब्रज-लोगनि, काल्हि कोऊ कितनो समुझैहों;
माई री, वा मुखकी मुसकान सँभारी न जैहों सँभारी न जैहों ॥

. . . . राग पूरबी - ताल दीपचंदी

धूरि-भरे अति सोभित स्यामजु, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत-खात फिरैं अँगना, पगपैंजनी बाजतीं, पीरी कछोटी ॥
वा छबिकों रसखानि बिलोकत, बारत कामकलानिधि-कोटी।
कागके भाग कहा कहिए, हरि-हाथसों लै गयो माखन-रोटी ॥

. . . . राग - भूपाली

◆◆◆

बीत गये दिन

बीत गये दिन भजन बिना रे!
बाल अवस्था खेल गँवायो, जब जोबन तब मान घना रे ॥
लाहे कारन मूल गँवायो, अजहुँ न गइ मन की तिसना रे।
कहत कबीर सुनो भई साधो! पार उतर गये संत जना रे ॥

◆◆◆

हे निर्गुन

निर्गुन कौन देसको बासी?
मधुकर! हँसि-समुझाय सौंह दे, बूझति साँच न हाँसी ॥
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि को दासी।

कैसो बरन, भेस है कैसो, केहि रसमें अभिलासी ॥
पावैगो पुनि कियो आपनो, जो रे! कहैगो गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो-सो सूर सबै मति नासी ॥

◆◆◆

बंदौ चरन सरोज

बंदौ चरन सरोज तुम्हारे।
जे पदपदुम सदासिवके धन सिंधुसुता उरतें नहिं टारे ॥
जे पदपदुम परसि भइ पावन सुरसरि दरस कटत अघ भारे।
जे पदपदुम परसि ऋषि-पत्नी, बलि, नृप, ब्याध-पतित बहु तारे॥
जे पदपदुम रमत बृंदाबन अहि सिर धरि अगनित रिपु मारे।
जे पदपदुम परसि ब्रज भामिनि, सरबसु दै सुत सदन बिसारे ॥
जे पदपदुम रमत पांडव दल दूत भये सब काज सँवारे।
सूरदास तेई पदपंकज त्रिबिध ताप दुख हरन हमारे ॥

◆◆◆

अबके माधव

अबके माधव मोहे उबारि।
मगन हौं भव-अंबु-निधिमें कृपासिंधु मुरारि ॥
नीर अति गम्भीर माया, लोभ लहरि तरंग।
लिये जात अगाध जलमें गहे ग्राह अनंग ॥
मीन इंद्रिय अतिहि काटत मोट अघ सिर भार।
पग न इत उत धरन पावत उरझि मोह सेवार ॥
काम क्रोध समेत तृस्ना पवन अति झकझोर।
नाहिं चितवन देत तिय सुत नाम-नौका ओर ॥
थक्यो बीच बेहाल बिहबल सुनहु करूना मूल।
स्याम भुज गहि काढ़ि डारहु सूर ब्रजके कूल ॥

◆◆◆

अब लौं नसानी

अब लौं नसानी, अब न नसैहो।
रामकृपा भव निसा सिरानी जागे फिर न डसैहौ ॥
पायो नाम चारू चिंतामनि उर करतें न खसैहौ।
स्याम रूप सुचिरूचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौ ॥
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन निज बस ह्वै न हँसैहो।
मन मधुपहिं प्रन करि, तुलसी रघुपतिपदकमल बसैहो ॥।

◆◆◆

भज मन रामचरन

भज मन रामचरन सुखदाई ॥ ध्रु. ॥
जिहि चरननसे निकसी सुरसरि संकर जटा समाई।
जटासंकरी नाम पर्‌यो है, त्रिभुवन तारन आई ॥
जिन चरननकी चरनपादुका भरत रह्यो लव लाई।
सोई चरन केवट धोइ लीने तब हरि नाव चलाई ॥
सोई चरन संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई।
सोई चरन गौतमऋषि-नारी परसि परमपद पाई ॥
दंडकबन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई।
सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा सँग धाई ॥
कपि सुग्रीव बंधु भय-ब्याकुल तिन जय छत्र फिराई।
रिपु को अनुज बिभीषन निसिचर परसत लंका पाई ॥
सिव सनकादिक अरू ब्रह्मादिक सेस सहस मुख गाई।
तुलसिदास मारूत-सुतकी प्रभु निज मुख करत बड़ाई ॥

◆◆◆

एकेदंता गजाननम्

एकेदंता गजाननम्, पार्वतीतनय गजाननम्।
श्री गणेशाय गजाननम् लंबोदर प्रभु गजाननम्
पार्वतीतनय गजाननम्।
विघ्नहर्ता प्रभु गजाननम्, हे शिवनंदन गजाननम्
पार्वतीतनय गजाननम्।
मोदक प्रिय प्रभु गजाननम्, मूषकवाहन गजाननम्
पार्वतीतनय गजाननम्।
गजमुख, गणपति गजाननम्, सिद्धिविनायक गजाननम्
पार्वतीतनय गजाननम्।

◆◆◆

ऐ मालिक तेरे बंदे हम

ऐ मालिक तेरे बंदे हम
ऐसे हों हमारे करम
नेकी पर चलें, और बदी से टलें
ताकि हँसते हुए निकले दम।

बड़ा कमज़ोर है आदमी
अभी लाखों है इसमें कमी
पर तू जो खड़ा, है दयालु बड़ा
तेरी किरपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम
तू ही झेलेगा हमसब के ग़म
नेकी पर चलें . . . .।

ये अँधेरा घना छा रहा
तेरा इंसान घबरा रहा
हो रहा बेख़बर, कुछ न आता नज़र
सुख का सूरज छुपा जा रहा

है तेरी रोशनी में जो दम
तो अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चलें . . . .।

जब जुल्मों का हो सामना
तब तू ही हमें थामना
वो बुराई करें, हम भलाई भरें
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम
और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें . . . . ।

◆◆◆

तुम्हीं हो माता

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु, सखा तुम्हीं हो

तुम्हीं हो साथी, तुम्हीं सहारे
कोई न अपना, सिवा तुम्हारे
तुम्हीं हो नैया, तुम्हीं खेवैया
तुम्हीं हो बंधु . . . .।

जो खिल सकें ना वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
दया की दृष्टि सदा ही रखना
तुम्हीं हो बंधु . . . . ।

◆◆◆

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमज़ोर हो ना,
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूल कर भी, कोई भूल हो ना।
इतनी शक्ति . . . .।
दूर अज्ञान के हो अँधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे,
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दें, भली ज़िन्दगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना
हम चलें नेक . . . .।
यह न सोचें हमें क्या मिला है, हम यह सोचें किया क्या है अर्पण,
फूल खुशियों के बाँटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाए मधुबन
अपनी करूणा का जल तू बहा दे, कर दे पावन हरेक मन का कोना,
हम चलें नेक . . . .।

◆◆◆

हमको मन की शक्ति देना

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें
दूसरों की जय से पहले, खुद की जय करें
हमको मन की . . . .
भेद-भाव अपने दिल से साफ करे सकें
दोस्तों से भूल हो तो माफ कर सकें
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें
दूसरों की जय . . . .।
मुश्किलें पड़ें तो हम पे इतना कर्म कर
साथ दें तो धर्म का, चलें तो धर्म पर
खुद पे हौसला रहे, बदी से ना डरें
दूसरों की जय . . . .।

◆◆◆

तुम राम कहो

तुम राम कहो, वे रहीम कहें,
दोनों की गरज अल्लाह से है।
तुम दीन कहो, वे धर्म कहें,
मंशा तो उसी की चाह से है।
बनवाओ शिवाला या मस्जिद,
चूना है वही, पत्थर है वही।
मेमार वही, मज़दूर वही,
अल्लाह वही और राम वही।
कहते हैं नमाज़ जिसे मुस्लिम,
हिन्दू के लिए पूजा है वही।
फिर लड़ने से क्या हासिल है,
जीफ़हम हो तुम, नादान नहीं
क्यों लड़ता है मूरख बन्दे,
यह तेरी ख़ामख़्याली है।
है पेड़ की जड़ तो एक वही,
हम मज़हब डाली-डाली है ॥

◆◆◆

नंदनंदन बिलमाई

नंदनंदन बिलमाई, बदराने घेरी माई ॥
इत घन लरजे, उत घन गरजे, चमकत बिज्जु सवाई।
उमड़-घुमड़ चहुँ दिसिसे आए, पवन चलै पुरवाई ॥
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणाई।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, चरणकँवल चित लाई ॥

◆◆◆

शक्ति को नमन करो

शक्ति को नमन करो।
शक्ति है दमन यदि, शक्ति ही सृजन भी है।
शक्ति में निहित दया, सत्य-अवतरण भी है।
शक्ति में क्षमा भरी, शक्ति देती दण्ड भी।
शक्ति चंद्र-स्निग्धता है, सूर्य सी प्रचंड भी।
आसुरी प्रवृत्तियों की शक्ति का दमन करो।
शक्ति में गमन करो।
शक्ति को नमन करो।

◆◆◆

मन मस्त हुआ तो क्यों बोले

मन मस्त हुआ तो क्यों बोले।
हीरा पायो, गाँठ गठियाओ,
बार-बार वाको क्यों खोले।
मन मस्त हुआ तो क्यों बोले
हलकी थी तब चढ़ी तराजू,
पूरी भई तब क्यों तोले।
मन मस्त हुआ. . . . . ।
हंसा पायो मानसरोवर
ताल-तलैया क्यों डोले
मन मस्त हुआ तो क्यों बोले
तेरा साहब है घर माँहि,
बाहर नैना क्यों खोले।
मन मस्त हुआ. . . . . ।

◆◆◆

हौं कुरबाने जाउँ पियारे

हौं कुरबाने जाउँ पियारे, हौं कुरबाने जाउँ ॥ टेक ॥
हौं कुरबाने जाउँ तिन्हाँ दे, लैन जो तेरा नाउँ।
लैन जो तेरा नाउँ तिन्हाँ दे, सद कुरबाने जाउँ ॥ 1 ॥
काया रँगन जे थिये प्यारे, पाइये नाउँ मजीठ।
रंगनवाला जे रँगे साहिब, ऐसा रंग न डीठ ॥ 2 ॥
जिनके चोलड़े रशड़े प्यारे कंत तिन्हाँ दे पास।
धूड़ तिन्हाँ कोजे मिले जीको, नानकदी अरदास ॥ 3 ॥

◆◆◆

मुरसिद मेरा मरहमी

मुरसिद मेरा मरहमी, जिन मरम बताया।
दिल अंदर दीदार है खोजा तिन पाया ॥ 1 ॥
तसबी एक अजूब है, जामें हरदम दाना।
कुंज किनारे बैठिके, फेरा तिन्ह जाना ॥ 2 ॥

◆◆◆

काहे रे बन खोजन जाई

काहे रे बन खोजन जाई।
सरब निवासी सदा अलोपा, तोही संग समाई ॥ 1 ॥
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, मुकर माहि जस छाई।
तैसे ही हरि बसै निरंतर, घट ही खोजौ भाई ॥ 2 ॥
बाहर भीतर एकै जानों, यह गुरु ग्यान बताई।
जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटै न भ्रमकी काई ॥ 3 ॥

◆◆◆

सतगुरु है सत पुरुष अकेला

सतगुरु है सत पुरुष अकेला, पिंड ब्रह्माण्डके बाहर मेला ॥
दूरतें दूर, ऊँचतें ऊँचा, बाट न घाट गली नहिं कूचा ॥
आदि न अंत मध्य नहिं तीरा, अगम अपार अति गहिर गँभीरा ॥
कच्छ दृष्टि तहँ ध्यान लगावै, पलमहँ कीट भृंग होई जावै।
जैसे चकोर चंदके पासा, दीसै धरती बसै अकासा ॥
कह 'यारी' ऐसे मन लावै, तब चातक स्वाती-जल पावै ॥

◆◆◆

बाबुल कैसे बिसरा जाई

बाबुल कैसे बिसरा जाई?
जदि मैं पति-संग रल खेलूँगी, आपा धरम समाई।
सतगुरू मेरे किरपा कीन्ही, उत्तम बर परनाई;
अब मेरे साईंको सरम पड़ेगी, लेगा चरन लगाई ॥
तै जानराय मैं बाली भोली, तैं निर्मल मैं मैली;
तैं बतरावै, मैं बोल ना जानूं, भेद न सकूँ सहेली ॥
तैं ब्रह्म-भाव मैं आतम-कन्या, समझ न जानूं बानी;
'दरिया' कहै, पति पूरा पाया, यह निश्चय करि जानी ॥ 2

◆◆◆

गंगा आए कहाँ से

गंगा आए कहाँ से
गंगा जाए कहाँ रे
लहराए पानी में जैसे धूप-छाँव रे।
रात कारी दिन उजियारा मिल गए दोनों साए,
साँझ ने देखो रंग-रूप के कैसे भेद मिटाए रे
लहराए . . . .।

काँच कोई, माटी कोई रंग-बिरंगे प्याले,
प्यास लगे तो एक बराबर जिसमें पानी ढाले रे
लहराए . . . . ।

◆◆◆

ऊपर गगन विशाल

ऊपर गगन विशाल, नीचे गहरा पाताल,
बीच में धरती वाह मेरे मालिक! तूने किया कमाल!
अरे वाह मेरे मालिक! क्या तेरी लीला! तूने किया कमाल!
एक बूँद से रच दिया तूने सूरज आग का गोला,
एक बूँद से रचा चंद्रमा लाखों सितारों का टोला,
तूने रच दिया पवन झकोला,
यह पानी और यह शोला,
यह बादल का उड़न खटोला
जिसे देख हमारा मन डोला।
सोच-सोच हम करें अचंभा, नजर न आता एक भी खंभा
फिर भी ये आकाश खड़ा है हुए करोड़ों साल
रे मालिक तूने किया कमाल!
तूने रचा इक अद्भुत प्राणी
जिसका नाम इंसान
जिसकी नन्हीं जान के भीतर भरा हुआ तूफान
इस जग में इन्सान के दिल को कौन सका पहचान,
इसमें ही शैतान छुपा है, इसमें ही भगवान
बड़ा गज़ब का है यह खिलौना इसकी नहीं मिसाल
रे मालिक तूने किया कमाल!

◆◆◆

इतने प्यारे दिन

इतने प्यारे दिन और इतनी प्यारी रातें,
कौन हमें देता है, ये मीठी सी सौगातें
बादल से पूछें हवाएँ जाके
अंबर से दरिया मिले लहरा के
तितली के प्यारे-प्यारे चटकीले पांख
इतने प्यारे .... सौगातें, रामा रे। हो रामा रे!
हरे-हरे खेत और ऊँचे-ऊँचे पर्वत,
न्यारी है जन्नत से अपनी ये ज़मीं,
छोड़ के अपनी, ऐसी प्यारी धरती,
हमको कहीं और जाना नहीं,
शुक्रिया उसको कि जिसने दीं हमें ये नियामतें
हर इक पल जो पेश करता, ज़िन्दगी के गुलदस्ते
शुक्रिया-शुक्रिया-शुक्रिया!
हिरणों की ये आँखें और हंसों की यें पाँतें
कौन हमें देता है ये मीठी सी सौगातें,
पत्थर पे घिसके लाती है रंग (हिना) हीना
बहता है धूप में ना जब तलक पसीना
दानों में आए न तबतक स्वाद और सुगंध
इतने प्यारे .... रामा रे!
मौसम के द्वार पर किसके लगे पहरे?
हवा का है घर कहाँ, कहाँ जा के ठहरे?
आहट फूलों के खिलने की, क्यों नही देती है सुनाई?
रात की दीवार फाँदने में, सुबह को क्यों चोट नहीं आई?
शोर ये सन्नाटे का, और शोरों के सन्नाटे
कौन हमें देता है ये मीठी सी सौगातें
पानी में कैसे बस गए द्वीप सुहाने
चिड़ियों को कौन सिखाए मीठे गाने,
सागर में भर दिए किसने सीपी और शंख

इतने प्यारे .... रामा रे!
माँ के पेट में कौन कुम्हार ये चाक चलाए हमको गढ़े,
हाथ बढ़ाकर किसने गगन में इतने हीरे-माणिक जड़े,
राज़ कभी न कुदरत खोले, और ये रंग-बिरंगे चोले,
रुत बदले, बारी-बारी रुत बदले
सपने कैसे आते, और लौट कहाँ वो जाते,
कौन हमें देता है, ये मीठी सी सौगातें
चंदा इतनी चाँदनी कहाँ से लाए
कोहरे में कैसे किरणें राह बनाएँ
भरता है इन्द्रधनुष में कौन सात रंग
इतने प्यारे .... रामा रे!

◆◆◆

तुम मुझमें प्रिय

तुम मुझमें प्रिय फिर परिचय क्या?
तारक में छवि प्राणों में स्मृति
पलकों में नीरव पद की गति
लघु उर में पुलकों की संसृति
भर लाई हूँ तेरी चंचल,
और करुँ जग में संचय क्या? . . . . तुम मुझमें
तेरा मुख सुहास अरुणोदय,
परछाई रजनी विषादमय,
यह जागृति वह नींद स्वप्नमय,
खेल-खेल, थक-थक सोने दो,
मैं समझूँगी सृष्टि-प्रलय क्या? . . . . तुम मुझमें
चित्रित तू मैं हूँ रेखाक्रम,
मधुर राग तू, मैं स्वर-संगम,
तुम असीम मैं सीमा का भ्रम
काया-छाया में रहस्यमय,
प्रेयसी-प्रियतम का अभिनय क्या? . . . . तुम मुझमें

हरी-हरी वसुन्धरा

हरी-हरी वसुन्धरा पे नीला-नीला ये गगन
कि जिस पे बादलों की पालकी उड़ा रहा पवन
दिशाएँ देखो रंग भरी, चमक रही उमंग भरी
ये किसने फूल-फूल पे किया शृंगार है?
ये कौन चित्रकार है ये कौन चित्रकार?

तपस्वियों सी हैं अटल ये पर्वतों की चोटियाँ
ये सर्प सी घुमेरदार, घेरदार घाटियाँ,
ध्वजा से हैं खड़े हुए ये वृक्ष देवदार के,
गलीचे ये गुलाब के, बगीचे ये बहार के
ये किस कवि की कल्पना का चमत्कार है?
ये कौन चित्रकार है . . . .?

कुदरत की इस पवित्रता को तुम निहार लो,
इसके गुणों को अपने मन में तुम उतार लो
चमका लो आज लालिमा अपने ललाट की
कण-कण से झाँकती तुम्हें छवि विराट की
अपनी तो आँख एक है, उसकी हज़ार हैं,
ये कौन चित्रकार है . . . .?

◆◆◆

देश-वंदना

विस्तृत महाजलधि, विस्तृत महादेश
पर्वत, नदी, नाद शोभित भूमि चारु सुमेर
दृष्टि जाए जहाँ तक - नयनाभिराम!

चिश्ती ने जिस ज़मीं पर

चिश्ती ने जिस ज़मीं पर पैग़ामे-हक़ सुनाया।
नानक ने जिस चमन में, वहदत का गीत गाया।
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया।
जिसने हिजाजियों से दश्ते-अरब छुड़ाया।
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।
यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था।
सारे जहाँ को जिसने इल्म-ओ-हुनर दिया था।
मिट्टी को जिसकी हक़ ने, ज़र का असर दिया था।
तुर्कों का जिसने दामन, हीरों से भर दिया था।
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।
टूटे थे जो सितारे फ़ारिस के आस्मां से
फिर ताब देके जिसने, चमकाये कहकशां से
वहदत की लय सुनी थी, दुनिया ने जिस मकां से
मीरे'अरब को आई, ठंडी हवा जहाँ से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।
बन्दे कलीम जिसके, परबत जहाँ के सीना
नूरे-नबी का आकर, ठहरा जहाँ सफीना
रिफ़्अत है जिस ज़मीं की, बामे-फलक का ज़ीना
जन्नत की ज़िन्दगी है, जिसकी फज़ा मे जीना
मेरा वतन वही है।

◆◆◆

हिमाद्रि तुंग शृंग से

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो, बढ़े चलो

असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्यदाह-सी
सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिंधु में सुवाडवाग्नि से जलो
प्रवीर हो जयी बनो बढ़े चलो, बढ़े चलो।

◆◆◆

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलसितां हमारा॥ .
परबत हो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमां का।
वो संतरी हमारा, वो पासबां हमारा॥
गोदी में खेलती हैं, जिसकी हजारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्के-ज़िनां हमारा॥
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा॥
. . . . सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
यूनान ओ 'मिस्र ओ' रोमां, सब मिट गए जहां से
बाक़ी अभी मग़र है नामों निशां हमारा
सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा
सरहद की मुश्किलों में तुम जांवेदां खड़े हो
बाकी इसी वजह से नामों निशां हमारा
मुमकिन ये कैसे होगा कोई जीत ले वतन को
सौ-सौ पे पड़ता भारी एक-एक जवां हमारा
दम से तेरी शहादत के मुल्क जी रहा है
है किसका ऐसा जैसा है पासबां हमारा
तुम हो तो कैसे हस्ती मिट जाएगी हमारी
दुश्मन हो ताक़यामत दौरे ज़मां हमारा
सुर्खी से तेरे ख़ूं की तेरी दास्तां लिखी है
देकर अमन गया है हर नौजवां हमारा
दिलवर के लिए दिलवर दुश्मन के लिए दुश्मन

क्यों ना मुरीद होगा सारा जहां हमारा
जोशे जुनूं को तेरे करते सलाम हम हैं
तुझसे हुआ वतन ये रश्के ज़िनां हमारा

◆◆◆

अरूण यह मधुमय देश

अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा
सरस तामरस गर्व विभा पर, नाच रही तरूशिखा मनोहर,
छिटका जीवन-हरियाली पर, मंगल कुमकुम सारा।
लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे,
उड़ते खग जिस ओर किए मुख समझ नीड़ निज न्यारा।
बरसाती आँखो के बादल, बनते जहाँ भरे करुणाजल,
लहरें टकराती अनन्त की पाकर जहाँ किनारा।
हेमकुम्भ ले उषा सवेरे भरती ढुलकाती सुख मेरे,
मंदिर ऊँघते रहते जब जग कर रजनीभर तारा।
अरूण यह मधुमय देश हमारा।

◆◆◆

हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं - 2
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक है
निशात सोन शालमार लाल ज़ार सोन
येत्युक शुहुल शुहुल ये ख्वश इवुन बहार सोन
छि अथ निसार इउस वतन छू दिल करार सोन-2
छू नफ़रतस करानग़ीर लोल नार सोन-2
यिछु सोन, चमन, यिछु सोन वतन - 4
बेला गुलाब जूही, चम्पा चमेली-2
प्यारे-प्यारे फूल गूँथे माला में एक हैं - 2

एई देसौ, ऐई माटी मौमोतामौयी माटी-2
सेबारे तारौ, जीबौनो देबा, रौखिबा तारो नाटी
सुजौला, सुफौला सौस्यो स्यैमौला-2
आमोए जौन्मो माटी
एई देसो, एई माटी, मौमौतामौयी माटी-2
कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी - 2
गा रही तराना बुलबुल राग मगर एक है-2
हे रूणी चेरा धनिया अजमाल जीरा कँवरा-2
माता मेड़ा देड़ा लाल रानी नेतलरा भरतार-2
म्हारो हेलो सुनो जी रामा पीर-2
म्हारो हेलो सुनो जी रामा पीर-2
गंगा, जमुना ब्रह्मपुत्र कृष्णा कावेरी-2
जा के मिल गई सागर में हुई सब एक हैं-2
इसीम लासीम लेन्नि लेचिना
तिरईन मातल्लि देशभोवकटे
वेशालु, भेदालु वेरू तोचिना
वारू विरतानु भारती युले
भाषलन्नि वेरईन भावभोक्कटे
राज्यालु वेरईन राष्ट्रभोक्कटे
मतालन्नि वेरईन मनशुलोक्कटे
तत्वालु वेरईन धर्मभोक्कटे
धर्म है अनेक जिनका सार इक वही है-2
पंथ हैं निराले सबकी मंज़िल तो एक है-2
हिन्द देश के निवासी सभी जन एक है
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं।

◆◆◆

मेरे वतन से अच्छा

मेरे वतन से अच्छा कोई वतन नहीं है,
सारे जहाँ में ऐसा कोई रतन नहीं है।
इस देश जैसी गंगा, यमुना कहीं न होगी,
बेदोष, खूबसूरत रचना कहीं न होगी,
इस देश जैसी धरती, ऐसा गगन नहीं है।
यह राम, कृष्ण, गौतम, नानक गुरु की बस्ती,
पैदा यहीं हुई थी, गाँधी की नेक हस्ती,
किसी और देश की तो ऐसी पवन नहीं है।
इस सरज़मी पे आए गुणवान कैसे-कैसे
कभी कालिदास जैसे, कभी तानसेन जैसे,
हमें नाज़ है वतन पर, झूठी लगन नहीं है।

◆◆◆

मेरा रँग दे बसंती चोला

मेरा रँग दे बसंती चोला
माँ! रँग दे बसंती चोला।
बड़ा ही गहरा दाग़ है यारो
जिसका ग़ुलामी नाम है,
उसका जीना भी क्या जीना
जिसका देश ग़ुलाम है,
सीने में जो दिल था यारो
आज बना है शोला
मेरा रँग दे. . . . . ।
दम निकले इस देश की ख़ातिर
बस इतना अरमान है,
एक बार इस राह पे मरना
सौ जन्मों के समान है,

देख के वीरों की कुरबानी
अपना दिल भी बोला,
मेरा रंग दे. . . . . ।

जिस चोले को पहन शिवाजी
खेले अपनी जान पे
जिसे पहन झाँसी की रानी
मिट गईं अपनी आन पे
आज उसी को पहन के निकला
हम मस्तों का टोला

मेरा रंग दे. . . . . ।

◆◆◆

ऐ मेरे वतन के लोगो

ऐ मेरे वतन के लोगो
ज़रा आँख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो कुरबानी

तुम भूल न जाओ उनको
इसलिए सुनो ये कहानी

जो शहीद हुए . . . . ।
जब घायल हुआ हिमालय
ख़तरे में पड़ी आज़ादी
जब तक थी साँस लड़े वो
फिर अपनी लाश बिछा दी
संगीन पे रखकर माथा
सो गए अमर बलिदानी
जो शहीद हुए . . . . ।

जब देश में थी दिवाली
वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरों में

वो झेल रहे थे गोली
थे धन्य जवान वो अपने
थी धन्य वो उनकी जवानी
जो शहीद हुए . . . . ।

कोई सिख, कोई जाट, मराठा
कोई गुरखा, कोई मदरासी
सरहद पे मरनेवाला
हर वीर था भारतवासी
जो ख़ून गिरा पर्वत पर
वो खून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए . . . . ।

थी ख़ून से लथपथ साया
फिर भी बंदूक उठाके
दस-दस को एक ने मारा
फिर गिर गए होश गँवा के
जब अन्त समय आया तो
कह गए कि अब मरते हैं
खुश रहना देश के प्यारो
अब हम तो सफ़र करते हैं
क्या लोग थे वो दीवाने
क्या लोग थे वो अभिमानी
जो शहीद हुए . . . . ।

तुम भूल न जाओ उनको
इसलिए कही ये कहानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो कुरबानी

जय हिन्द, जय हिन्द की सेना
जय हिन्द, जय हिन्द की सेना
जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द।

◆◆◆

सुंदर सुभूमि भइया

सुंदर सुभूमि भइया, भारत के देसवा से
मोरे प्राण बसे हिम-खोह रे बटोहिया,
गंगा रे जमुनवा के झगमग पनिया से,
सरजू झमकी लहरावे रे बटोहिया।

◆◆◆

प्रकृति, प्रभात, सृष्टिबोध, उत्सव - रंग

संध्या का झुटपुट
बाँसों का झुरमुट
चहक रहीं चिड़ियाँ
टी-वी-टी-टुट् - टुट्!

ज्योति कलश छलके

ज्योति कलश छलके
हुए गुलाबी, लाल सुनहरे
रंग दल बादल के।
घर-आँगन, वन - उपवन - उपवन,
करती ज्योति अमृत से सिंचन
मंगल घट ढलके।
पात-पात बिरवा हरियाला
धरती का मुख हुआ उजाला
सच सपने कलके।
उषा ने आँचल फैलाया
फैली सुख की शीतल छाया
नीचे आँचल के।

◆◆◆

तरूण अरूण से रंजित

तरूण अरूण से रंजित धरणी, नभ लोचन है लाल,
भैया, नभ लोचन है लाल।
    मृदु समीर में नाचे तरणी, नदी बजावे ताल,
    भैया नदी बजावे ताल ॥
चले धरा के बंधन तोड़,
छाया चुम्बित तट को छोड़।
    नव प्रभात लाली के सम्मुख, चढ़ाव चिट्टा पाल।
    भैया, नभ लोचन ॥
हमें नहीं धन दौलत आस,
है स्वच्छन्द हमारा हास।
    रिझा नहीं सकता है हमको, जग माया का जाल ॥
    भैया, नभ लोचन ॥

शोक नदी में देह तरी को, चलाना सीखो चलाना सीखो।
जल्द कटेंगे दिन अब उनके, क्यों देते हो टाल ॥
भैया नभ लोचन ॥
चप्पु अचपल जलतल मार,
दिन रहते कर बेड़ा पार।
अब ही आवेगा दुखदायक, धूसर संध्याकाल।
भैया, नभ लोचन ॥

◆◆◆

भयो प्रभात

भयो प्रभात, दिशा प्राचीने साज्यो अनुपम साज।
साज्यो अनुपम साज।
मित्रराज रवि उदय भये,
पुलकित वसुधा आज ॥
मंद सुगंधित वायु डोलत,
आनंदित खग-वृंद।
चहँकि चहँकि सब सुमधुर स्वर से,
गावत मंगल छंद ॥ भयो प्रभात ॥
स्निग्ध प्रफुल्लित कुसुमित तरुवर,
दिनकर किरणनि चूमि।
सुमन समर्पण करि-करि स्वागत,
करत सुखी ह्वै झूमि ॥ भयो प्रभात ॥
अगम मार्ग को सुगम करन प्रभु,
प्रकट भयो दिन राज।
मित्र देव नवजीवन दायक,
दीपक जनहित काज ॥ भयो प्रभात ॥

◆◆◆

बीती विभावरी, जाग री

बीती विभावरी, जाग री
अंबर-पनघट में डुबो रही, ताराघट उषा नागरी।
खगकुल कुल-कुल स्वर बोल रहा
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई, मधु मुकुल नवल रस गागरी।
अधरों में राग अमन्द पिए
अलकों में मलयज बंद किए
तू अबतक सोई है आलि, आँखों में भरे विहाग री।

◆◆◆

जग उजियारा छाए

जग उजियारा छाए
मन का अँधेरा जाए,
किरणों की रानी गाए,
जागो हे, मेरे मनमोहन प्यारे . . . . ।
जागो मोहन प्यारे
नवयुग चूमे नैन तिहारे, जागो, जागो मोहन प्यारे।
भीगी-भीगी अँखियों से मुस्काए,
ये नई भोर तोहे अंग लगाए
बाँहें फैला गोद खिलाए। . . . . जागो।
जिसने मन का दीप जलाया,
दुनिया को उसने ही उजला पाया,
मत रहना अँखियों के सहारे। . . . . जागो।
किरण-परी गगरी छलकाए
ज्योति का प्यासा, प्यास बुझाए
फूल बने मन के अंगारे। . . . . जागो।

◆◆◆

ओरे गृहो बाशी

ओरे गृहो बाशी,
खोल दार खोल, लागलो जे दोल।
स्थले जले बनो तले लागलो जे दोल।
दार खोल, दार खोल ॥ ओरे गृहो बाशी
राँगा हाशी राशी राशी आशोके पलाशे,
राँगा नेशा मेघे मेशा, प्रोभातो आकाशे,
नोबिनो पाताय लागे राँगा हिल्लोल।
दार खोल दार खोल ॥
बेनु बनो मर्मरो दोखिनो बताशे
प्रोजापोति दोले घाशे घाशे।
मोऊ माछी फिरे जाची फूलेरो दोखिना,
पाखाय बाजाय तार भिखारिये बीना,
माधोबी बिताने वायु गन्धे विभोल।
दार खोल दार खोल ॥

◆◆◆

मेहुलो गाजेने

मेहुलो गाजेने माध्व नाचे
            मेहुलो गाजेने माध्व नाचे।
            रूम झुम वागे पाय घुंघलड़ी रे ॥
ताल पखाज वगाड़े रे गोपी।
कृष्ण ब्गाड़े वेणु बांसलड़ी रे ॥
            पेहरण चरण ने चीर चूँदलड़ी।
            ओढ़न आछी लोमलड़ी रे ॥
दादुर मोर पपैया रे बोले।
बोलेशी मीठी एवी कोयलड़ी रे ॥
            धन्य वंसीवट धन्य जमुना तट।

धन्य वृन्दावन अवतार रे ॥
धन्य नरसैयानी जीभलड़ी रे।
जेणे गादो राग मल्लार रे ॥ मेहुलो

◆◆◆

ओ नोदी रे

ओ नोदी रे एकटि कथा शुधाई शुधु तोमारे
बलो कोथाय तोमार देश तोमार नेई की चलार शेष।
तोमर कोनो बाँधो नाई
तुमि घर छाड़ा की ताई
एई आछो भाँटाय आगार एई तो देखि जोआरे।
बलो कोथाय . . . . ओ नोदी रे
एकुल भेंगें ओकुल तुमि गौरो
जार एकुल ओकुल दुकुल गेलो तार लागि की करो
आमार भाबछो मिछेई पर तोमार नाई की अबोसर
सुख दुख्खेर कथा कीछु कोइले ना हय आमारे
बलो कोथाय . . . . ओ नोदी रे

◆◆◆

आदि कुदरत, अन्त है कुदरत

आदि कुदरत, अन्त है कुदरत, बचपन कुदरत, यौवन कुदरत
यों जीवन पर्यन्त है कुदरत
साँसें कुदरत, धड़कन कुदरत, रिश्ते कुदरत, बंधन कुदरत
कहाँ नहीं आच्छन्न है कुदरत
मिट्टी कुदरत, पर्वत कुदरत, कुर्बत कुदरत, गुरबत कुदरत
नेकी कुदरत, बदी है कुदरत , लम्हा कुदरत, सदी है कुदरत
बाहर कुदरत, अंदर कुदरत, सहरा और समंदर कुदरत
रोटी कुदरत, पानी कुदरत, कविता, गीत, कहानी कुदरत
सेहत कुदरत, आदत कुदरत, इल्मों हुनर इबादत कुदरत

भूख है कुदरत, प्यास है कुदरत, आम है कुदरत, ख़ास है कुदरत
सुर है कुदरत, साज़ है कुदरत, अहले-सहर रियाज़ है कुदरत

◆◆◆

खेलो-खेलो नंदलाला

खेलो-खेलो नंदलाला
हमसंग रंगीली होली।
ब्रजभवनन में रंगीली सखियाँ आईं देखन, खेलो . . . . . . ।
डगर चलत छेड़त गिरिधारी
मारत तान कनक पिचकारी, खेलो . . . . ।
हरित बँसुरिया रँगी रंग केसर
कुसुमित राधा कुसुमित नटवर, खेला. . . . . ।
ऐसी होली खेली कन्हाई,
शोभा ब्रज की बरनी न जाई, खेलो . . . . ।

◆◆◆

होरी खेलत हैं गिरधारी

होरी खेलत हैं गिरधारी।
मुरली चंग बजत डफ न्यारो सँग जुबती ब्रजनारी ॥
चंदन केसर छिड़कत मोहन अपने हाथ बिहारी।
भरि भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ देत सबनपै डारी ॥
छैल छबीले नवल कान्ह सँग स्यामा प्राण पियारी।
गावत चार धमार राग तहँ दै दै कर करतारी ॥
फाग जु खेलत रसिक साँवरो बाढ़यो रस ब्रज भारी।
मीराकूँ प्रभु गिरधर मिलिया मोहनलाल बिहारी ॥

◆◆◆

पावस रितु बृन्दावनकी

पावस रितु बृन्दावनकी दुति दिन-दिन दूनी दरसै है।
छबि सरसै है लूमझूम यो सावन घन घन बरसै है ॥ 1 ॥
हरिया तरवर सरवर भरिया जमुना नीर कलोले है।
मन मोलै है, बागोंमें मोर सुहावणो बोलै है ॥ 2 ॥
आभा माहीं बिजली चमकै जलधर गहरो गाजै है।
रितु राजै है, स्यामकी सुंदर मुरली बाजै है ॥ 3 ॥

◆◆◆

मारो मारो हो स्याम

मारो मारो हो स्याम पिचकारी हो।
ताक लगाये खड़ी सखियन सँग ओट लिये राधा प्यारी हो ॥
देखो देखो स्याम वहै कोउ आवति, अबीर लिये भरि थारी हो ॥
इक पिचकारी और प्रभु मारो, भींज जाय तन सारी हो।
‘फरहत’ निरखि-निरखि यी लीला, हरिचरन बलिहारी हो ॥

◆◆◆

सूफियाना, साखी, ज्ञान-दर्शन

अब गाँव रे नाँव रे कोई धरौ
हम साँवरे रंग रँगी सो रँगी।

छाप तिलक सब छीनी

छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाए के
तू मिला भी है, तू जुदा भी है, तेरा क्या कहना।
तू सनम भी है, तू ख़ुदा भी है, तेरा क्या कहना!
छाप तिलक . . . . ।
जो तू माँगे रंग की रँगाई,
मोरा गिरवी जोवन रख लीनी रे मोसे नैना मिलाए के।
छाप तिलक . . . . ।
बलि-बलि जाऊँ मैं, तोरे रंगरेजवा
अपने ही रंग रंग दीनी रे मोसे नैना मिलाए के।
छाप तिलक . . . . ।

◆◆◆

सूरत के बलिहारी

तोरी सूरत के बलिहारी
निज़ाम, तोरी सूरत के बलिहारी।
सब सखियन में चुनर मोरी मैली
देख हँसे नर-नारी, निज़ाम तोरी सूरत . . . . ।
अबके बहार चूनर मोरी रँग दे
सुन ले अरज हमारी, निज़ाम तोरी सूरत के बलिहारी।

◆◆◆

दमादम मस्त कलंदर

हो लाल मेरी पत रखियो बला झूले लालण
सिंगड़ी दा, सेवड़ दा, सफी शाहबाद कलंदर
दमादम मस्त कलंदर, अली दम दम दे अंदर
दमादम मस्त कलंदर, अली दा पहला नंबर, हो लाल मेरी . ।

चार चराग़ तेरे बरण हमेशा
पंजवा मैं बारण आई बला झूले लालण
सिंगड़ी दा. . . . . शाहबाद कलंदर।
हिंद सिंध पीरां तेरी नोबत बाजे
नाल बजे घड़ियाल बला झूले लालण
सिंगड़ी दा . . . . शाहबद कलंदर।

◆◆◆

बहुत रही बाबुल घर

बहुत रही बाबुल घर दुलहिन, चल तेरे पी ने बुलाई।
बहुत खेल खेली सखियनसों अंत करी लरकाई ॥
न्हाय-धोयके बस्तर पहिरे, सब ही सिंगार बनाई।
बिदा करनेको कुटुँब सब आये, सिंगरे लोग लुगाई ॥
चार कहारन डोली उठाई, संग पुरोहित नाई।
चले ही बनैगी होत कहा है, नैनन नीर बहाई ॥
अंत बिदा ह्वै चलि है दुलहिन काहूकी कछु न बसाई।
मौज खुशी सब देखत रह गये, माता पिता औ भाई ॥
सोना भी दीन्हा, रूपा भी दीन्हा, बाबुल दिल-दरियाई।
गहेल गहली डोलति आँगनमें, अचानक पकर बैठाई ॥
बैठत मलमल कपरे पहनाये, केसर तिलक लगाई।
'खुसरो' चली ससुरारी सजनी, संग नहीं कोई जाई।

◆◆◆

ओ चितेरे!

ओ चितेरे!
जादूवाले रंग तेरे,
क्या करिश्मा कर गए, सब तेरे ही रंग रँग गए।
हर हयाते-कश्ती का तू नाख़ुदा है,
एक लम्हे को नहीं होता जुदा है,
साँसों का यह आना-जाना, इसमें है तेरा ठिकाना,
हर दिल तेरा आशियाना, देर से हमने है जाना -
पर ओ मौला! तू है दाता,
तेरा हर ज़र्रे से नाता,
तू नहीं करना बंदों की, ग़लतियों का एहतिसाब
तू इलाही, तू है हजरत, तू है साहिब, तू जनाब!!
शम्स क्या और क्या कमर है!
सहरा क्या, क्या समन्दर है!
तेरी आवाज़े-पा हर सू
तू ही तू बस तू, तू ही तू
अल्ला हू बस तू, तू ही तू,
मेरे अल्ला हू, मौला हू
अल्ला हू, अल्ला हू, अल्ला हू
मौला हू, मौला हू, मौला हू
तू ही तू बस तू, तू ही तू
ओ जुलाहे!
करघे पे सूते चढ़ाए,
चोले जो बुनकर दिए, सब तेरे ही अंग लग गए।
क्या करिश्मा कर गए! रब!
क्या करिश्मा कर गए!!

◆◆◆

प्रेमनगरके माहिं होरी

प्रेमनगरके माहिं होरी होय रही।
जब सों खेली हमहूँ चित दैं, आपनहूँ को खोय रही ॥
बहुतन कुल अरु लाज गँवाई, रहै न कोई काम।
नाचि उठैं, कभी गावन लागैं, भूले तन-धन-धाम ॥
बहुतनकी मति रंग रँगी है, जिनकौ लागौ प्रेम।
बहुतनकों अपनी सुधि नाहीं कौन करै अस नेम ॥
बहुतनकी गद्गद् हुई बानी, नैनन नीर ढराय।
बहुतनको बौरापन लागो, हूवा की कही न जाय ॥
प्रेमीकी गति प्रेमी जानै, जाके लागी होय।
चरनदास उस नेहनगर की सुकदेवा कहि सोय ॥

◆◆◆

वाँ शाह वजीरी है

है आशिक और माशूक जहाँ वाँ शाह वजीरी है बाबा!
नै रोना है, नै धोना है, नै दर्दे असीरी है बाबा!
दिन-रात बहारें-चोहलें हैं, औ ऐसे सफीरी है बाबा!
जो आशिक हैं सो जानै हैं, यह भेद फकीरी है बाबा!
हर आन हँसी, हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा!
जब आशिक मस्त फकीर हुए, फिर क्या दिलगीरी है बाबा!
जिस सिम्त नजर कर देखे हैं, उस दिलवर की फुलवारी है।
कहीं सब्ज़े की हरियाली है, कहीं फूलों की गुलक्यारी है ॥
दिन-रात मगन खुस बैठे हैं और आस उसी की भारी है।
बस, आप ही वो दातारी है, और आप ही वो भंडारी है ॥
हर आन हँसी, हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा!
जब आशिक मस्त फकीर हुए, फिर क्या दिलगीरी है बाबा!
हम चाकर जिसके हुस्नके हैं, वह दिलवर सबसे आला है।
उसने ही हमको बख्शा जी, उसने ही हमको पाला है।

दिल अपना भोला-भोला है, और इश्क बड़ा मतवाला है।
क्या कहिये आगे 'नज़ीर', अब कौन समझनेवाला है?
हर आन हँसी, हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा!
जब आशिक मस्त फकीर हुए, फिर क्या दिलगीरी है बाबा!

◆◆◆

है राग उन्हीं के रंग भरे

क्या इल्म उन्होंने सीख लिये, जो बिन लेखे को बाँचे हैं।
और बात नहीं मुँहसे निकले, बिन होंठ हिलाये जाँचे हैं ॥
दिल उनके तार सितारों के, तन उनके तबल तमाँचे हैं।
मुँह चंग ज़बां दिल सारंगी, पा घुंघरू हाथ कमाँचे हैं।
हैं राग उन्हींके रंग-भरे, और भाव उन्हींके साँचे हैं।
जो बे-गत बे-सुरताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं।
जब हाथको धोया हाथोंसे, तब हाथ लगे थिरकाने को।
और पाँवको खींचा पाँवोंसे, तो पाँव लगे गत पानेको ॥
था जिसकी खातिर नाच किया, जब मूरत उसकी आय गई।
जब छैल-छबीले सुंदरकी, छबि नैनों भीतर छाय गई।
एक मुरछा-गत-सी आय गई, और जोतमें जोत समाय गई ॥
हैं राग उन्हींके रंग-भरे, औ भाव उन्हींके साँचे हैं।
जो बे-गत बे-सुरताल हुए, बिन ताल पखावज नाचें हैं ॥
सब होस बदनका दूर हुआ, जब गतपर आ मिरदंग बजी।
तन भंग हुआ, दिल दंग हुआ, सब आन गई बेआन सजी ॥
यह नाचा कौन 'नज़ीर' अब याँ, और किसने देखा नाच अजी!
जब बूँद मिली जा दरियामें, इस तान का आखिर निकला जी।
हैं राग उन्हींके रंग भरे, औ भाव उन्हींके साँचे हैं ॥
जो बे-गत बे-सुरताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं ॥

◆◆◆

बहुत कठिन है डगर पनघट की

बहुत कठिन है डगर पनघट की,
बीच गैल बटमार खड़े हैं,
लोक-लाज डर भी जकड़े है
रुक न सकूँ और जा नहीं पाऊँ
मुर्शिद तक अब किसे पठाऊँ,
क्या भर लाऊँ मैं जमुना से मटकी? बहुत कठिन है . . . . ।
एरी सखी, मैं राह न पाऊँ
माहि को मिलने कैसे जाऊँ
उमगी नदिया, तन है काँचा
पार खड़ा मेरा केवट साँचा,
अब वो ही कुछ करे उपाय,
अलि, भँवर उसे दे ये बताए,
लाज राख मेरे घूँघटपट की। बहुत कठिन है . . ।
तेरा इश्क है मेरी आरज़ू
तेरा इश्क है मेरी आबरु
तेरा इश्क मैं कैसे तोड़ दूँ,
मेरी उम्र भर की तलाश है -
लाज राख मेरे घूँघट पट की। बहुत कठिन है . . . . ।
पी गई मीरा ज़हर का प्याला,
सारा विष अमृत कर डाला,
पी सा धन्वंतरि न कोई,
ऐसा है गोकुल का ग्वाला
- काँचही बाँस की बाँसुरी,
काँचा प्रेम का धागा,
बिन कौड़ी, बिन धेला
तिन पाया, जिन माँगा -
पहन इश्क का पँचरंग चोला
रखूँ निर्जला व्रत सुहाग का

हिजर अगन को साख बनाऊँ
पंच बहाल करुँ साँवरियाँ
मन-गीता पर हाथ रखाऊँ
सौं दूँ उसको भरी माँग की
बात है अब यह मेरे हठ की -
लाज राख मेरे घूँघट पट की। बहुत कठिन है. . ।

◆◆◆

फाग खेलन कैसे जाऊँ

फाग खेलन कैसे जाऊँ सखी री,
हरि-हाथन पिचकारी रहति है।
सबकी चुनरिया कुसुम रँग बोरी,
मोरी चुनर गुलनारी रहति है ॥
कोई सखी गावति, कोई बजावती,
हमको तो सुरत तिहारी रहति है।
कहत है 'काजिम' अपनी सखीसों,
पिया सुरत मतवारी रहति है ॥

◆◆◆

हौं तो खेलौं पियासंग होरी

हौं तो खेलौं पियासंग होरी।
दरस-परस पतिबरता पियकी, छबि निरखत भइ बौरी ॥
सोलह कला सँपूरन देखौं, रबि ससि भे इक ठौरी।
जबतें दृष्टि पर्‌यो अबिनासी लागी रूप-ठगोरी ॥
रसना रटति रहति निसि बासर, नैन लगे यहि ठौरी।
कह 'यारी' यादि करु हरिकी, कोई कहैं सो कहौ री ॥

◆◆◆

परबत बाँस मँगाव

परबत बाँस मँगाव मेरे बाबुल! नीके मड़वा छाव रे!
सोना दीन्हा, रूपा दीन्हा, बाबुल दिल-दरयाव रे!
हाथी दीन्हा, घोड़ा दिन्हा, बहुत-बहुत मन चाव रे!
डोलिया फँदाय पिया लै चलिहै, अब सँग नहिं कोई आव रे!
गुड़िया खेलन माँके घर रह गयी, नहिं खेलनेको दाव रे!
'निज़ामुद्दीन औलिया' बहियाँ पकरि चले, धरिहौं वाके पाँव रे!

◆◆◆

सात समंद की मसि करौं

सात समंद की मसि करौं, लेखनी सब बनराई।
धरती सब कागद करौं, हरि गुण लिखा न जाई ॥
क्षीर रूप हरि नाव है, नीर आन ब्योहार।
हंस रूप कोई साध है, तत का जाणनहार ॥
नवसत साजे कामनि, तन-मन रहि सँजोई।
पीव के मनि भावे नहीं, पटम किये का होई ॥
सातौं सबद जु बाजते, धरि-धरि होते राग।
ते मंदिर खाली पड़े, बैसण लागे काग ॥
नैनों की करि कोठरी, पुतरी पलंग बिछाई।
पलकों की चिक डारि के, पिउ को लिया रिझाई ॥

◆◆◆

दोहा संधि

कबीरा संगत साधु की हरै और की ब्याधि।
संगत बुरी असाधु की, आठों पहर कुपाधि ॥
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥

सुन रात गँवाई सोय के, दिवस गँवाया खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाए ॥
समय पाय फल होत हैं, समय पाय झरि जाए।
सदा रहत नहिं एक से, का रहीम पछताए ॥
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे ताड़, खजूर।
पंथी को छाया नहीं, और फल लागै अति दूर ॥
रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिय डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तलवारि ॥
पाणी ही तै हिम भया, हिम ह्वै गया बिलाई।
जो कुछ था सोई भया, अब कछु कहा न जाइ ॥
रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मुक्ता, मानुष, चून ॥
काया कसूं कमाण ज्यूँ, पंचतत्त करि बाण।
मारौ तो मन मिरग कौ, नहीं ता मिथ्या जाण ॥
अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहिं, झूठै मिलै न राम ॥

◆◆◆

झीनी झीनी बीनी चदरिया

झीनी झीनी बीनी चदरिया ।
काहे का ताना, काहे का बाना।
कौन तार से बीनी चदरिया ॥
इंगला पिंगला ताना भरनी।
सुषुमन तार से बीनी चदरिया ॥
आठ-कमल-दल चरखा डोले।
पाँच तत्व गुण तीनी चदरिया ॥
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी।
ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया ॥
दास कबीर जतन से ओढ़ी।
ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया ॥

फागुनके दिन चार

फागुनके दिन चार होली खेल मना रे ॥
बिन करताल पखावज बाजै अणहदकी झणकार रे।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै रोम-रोम रणकार रे ॥
सील सँतोखकी केसर घोली प्रेम प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर बरसत रंग अपार रे ॥
घटके सब पट खोल दिये हैं लोकलाज सब डार रे।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरणकँवल बलिहार रे ॥

◆◆◆

जो नर दुखमें

जो नर दुखमें दुख नहिं मानै।
सुख-सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ॥
नहिं निंदा, नहिं अस्तुति जाके, लोभ-मोह-अभिमाना।
हरष सोकतें रहै नियारो, नहिं मान-अपमाना ॥
आसा-मनसा सकल त्यागिकै, जगतें रहै निरासा।
काम-क्रोध जेहि परसै नाहिन, तेहि घट ब्रह्म निवासा ॥
गुरु किरपा जेहिं नरपै कीन्ही, तिन्ह यह जुगति पिछानी।
नानक लीन भयो गोबिंदसों, ज्यों पानी सँग पानी ॥

◆◆◆

ना वह रीझै जप तप

ना वह रीझै जप तप कीन्हे, ना आतमका जारे।
ना वह रीझै धोती टाँगे, ना कायाके पखारे ॥
दाया करै धरम मन राखै, घरमें रहे उदासी।
अपना-सा दुख सबका जानै, ताहि मिलै अबिनासी ॥
सहै कुसब्द बादहूँ त्यागै, छाड़ै गरब गुमाना।
यही रीझ मेरे निरंकारकी, कहत मलूक दिवाना ॥

साधो निंदक मित्र हमारा

साधो निंदक मित्र हमारा।
निंदककों निकटे ही राखो, होन न देउँ नियारा ॥
पाछे निंदा करि अघ धोवै, सुनि मन मिटै बिकारा।
जैसे सोना तापि अगिनमें, निरमल करै सोनारा ॥
घन अहरन कसि हीरा निबटै, कीमत लच्छ हजारा।
ऐसे जाँचत दुष्ट संतकूँ, करन जगत उजियारा ॥
जोग-जग्य-जप, पाप कटन हितु करै सकल संसारा।
बिन करनी मम करम कठिन सब, मेटै निंदक प्यारा ॥
सुखी रहो निंदक जग माहीं रोग न हो तन सारा।
हमरी निंदा करनेवाला, उतरै भवनिधि पारा ॥
निंदकके चरनोंकी अस्तुति, भाखौं बारंबारा।
चरनदास कहै सुनियो साधो, निंदक साधक भारा ॥

◆◆◆

सबसो ऊँची प्रेम सगाई

सबसो ऊँची प्रेम सगाई।
दुरजोधनके मेवा त्यागे, साग बिदुर घर खाई ॥
जूठे फल सबरीके खाये, बहु बिधि स्वाद बताई।
प्रेमके बस नृप सेवा कीन्हीं आप बने हरि नाई ॥
राजसु-जग्य जुधिठिर कीन्हों तामें जूँठ उठाई।
प्रेमके बस पारथ रथ हाँक्यो, भूलि गये ठकुराई ॥
ऐसी प्रीति बढ़ी बृंदाबन, गोपिन नाच नचाई।
सूर कूर इहि लायक नाहीं, कहँ लगि करौं बड़ाई ॥

◆◆◆

घूँघटका पट खोल री

घूँघटका पट खोल री तोहे पीव मिलेंगे ॥-ध्रु ॥
घट घट रमता राम रमैया कटुक बचन मत बोल री ॥-तोहे ॥ 1 ॥
रंगमहलमें दीप बरत हैं आसनसे मत डोल री ॥-तोहे ॥ 2 ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो अनहद बाजत ढोल री ॥-तोहे ॥ 3 ॥

◆◆◆

रस गगन गुफामें

रस गगन गुफामें अजर झरै।
बिन बाजा झनकार उठै जहँ, समुझि परै जब ध्यान धरै ॥
बिना ताल जहँ कमल फुलाने, तेहि चढ़ि हंसा केलि करै।
बिन चंदा उजियारी दरसैं जहँ-तहँ हंसा नजर परै ॥
दसवें द्वारे ताली लागी अलख पुरख जाको ध्यान धरै।
काल कराल निकट नहिं आवै, काम क्रोध मद लोभ जरै ॥
जुगन जुगन की तृषा बुझाती करम भरम अघ ब्याधि टरै ॥
कहैं कबीर सुनो भई साधो, अमर होय, कबहूँ न मरै ॥

◆◆◆

अगर है शौक

अगर है शौक मिलने का, तो हरदम लौ लगाता जा।
जलाकर खुदनुमाईको, भसम तनपर लगता जा ॥
न हो मुल्ला, न हो ब्रहमन, दुईकी छोड़कर पूजा।
हुक्म है शाह कलंदरको, अनलहक तू कहाता जा ॥
कहे मंसूर मस्ताना, मैंने हक दिलमें पहचाना।
वही मस्तोंका मयखाना, उसीके बीच आता जा ॥

◆◆◆

टुक बूझ कवन छप

टुक बूझ कवन छप आया है।
कई नुकतेमें जो फेर पड़ा, तब ऐन गैनका नाम धरा;
जब मुरसिद नुकता दूर किया, तब ऐनों ऐन कहाया है ॥
तुसीं इलम किताबाँ पढ़ दे हो, केहे उलटे माने कर दे हो;
बेमूजब ऐवें लड़दे हो, केहा उलटा बेद पढ़ाया है ॥
दुइ दूर करो, कोइ सोर नहीं, हैं हिन्दू-तुरक कोई होर नहीं;
सब साधु लखो, कोई चोर नहीं, घट-घट में आप समाया है ॥
ना मैं मुल्ला, ना मैं काजी, ना मैं सुन्नीं, ना मैं हाजी;
'बुल्लेशाह', नाल लाई बाजी, अनहद सबद बजाया है।

◆◆◆

माटी खुदी करेंदी

माटी खुदी करेंदी यार।
माटी जोड़ा, माटी घोड़ा, माटीदा असवार ॥
माटी माटीनू मारन लागी, माटीदे हथियार।
जिस माटीपर बहती माटी, तिस माटी हङ्कार ॥
माटी बाग, बगीचा माटी, माटीदी गुलजार।
माटी माटीनू देखन आई, माटीदी है बहार ॥
हँस-खेल फिर माटी होई, पौंदी पाँव पसार।
'बुल्लेशाह' बुझारत बूझी, लाह सिरों भों मार ॥

◆◆◆

हिंदू कहैं सो हम बड़े

हिंदू कहैं सो हम बड़े, मुसल्मान कहैं हम्म।
एक मूँग दो फाड़ हैं, कुण जादा कुण कम्म ॥
कुण जादा कुण कम्म, कभी करना नहिं कजिया।
एक भगत हो राम, दूजा रहिमानसे रजिया ॥
कहै ‘दीन दरवेश’ दोय सरिता मिल सिन्धू।
सबका साहब एक, एक मुसलिम इक हिंदू ॥

◆◆◆

प्रयाण, उद्बोधन, प्रेरणा, संकल्प

तेरा कोई साथ ना दे तो
तू है अपनी नदी, अपना किनारा
तू ही राह, मंज़िल भी तू ही,
तू है अपना सहारा

बढ़ता चल

बढ़ता चल, हो - ओ . . . .
बढ़ता चल हो - ओ
बढ़ता चल हो - ओ
तू एक हज़ारो, लाखों में है बढ़ता चल।
कभी रुकना नहीं, कभी झुकना नहीं,
घबराना नहीं, तेरी है ज़मीं, तू बढ़ता चल
तारों के हाथ पकड़ता चल - हो - ओ- ओ .
तू एक हज़ारों - लाखों में है बढ़ता चल।
(वो) वह रात गई, वह (वो) सुबह नई।

◆◆◆

उड़ा पाल माँझी

उड़ा पाल माँझी, बढ़ा नाव आगे।
न पड़ता दिखाई यदि हो किनारा,
अगर हो गई आज प्रतिकूल धारा,
क्षुधित व्याघ्र सा क्षुब्ध सागर गरजता,
अगर अंध तूफान करताल बजता।
न थककर शिथिल हो, न भय कर अभागे,
उड़ा पाल . . . . ।
निशा है अँधेरी, तिमिर घोर छाया,
महाकाल-मुख में जगत है समाया,
कहीं से न आती, अगर रश्मि-रेखा,
तुझे पथ दिखाती, तडित-ज्योति लेखा।
अरे, शोक मत कर, समझ भाग्य जागे,
उड़ा पाल . . . . ।
बला से अगर आज पतवार टूटी,
प्रलय-नृत्य करती चली दिग्वधूटी,

न साहस घटे, धीर साथी न छूटे,
न चिन्ता हृदय की प्रबल शक्ति लूटे।
मरण देख तुझको स्वयं आज भागे,
उड़ा पाल. . . . . ।

◆◆◆

साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना,
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना,
. . . . साथी।
हम मेहनतवालों ने जबभी मिलकर क़दम बढ़ाया,
सागर ने रस्ता छोड़ा, पर्वत ने शीश झुकाया,
फौलादी हैं सीने अपने, फौलादी हैं बाँहें,
हम चाहें तो पैदा कर दें चट्टानों में राहें
. . . . साथी।
एक से एक मिले तो जर्रा बन जाता है सहरा,
एक से एक मिले तो कतरा बन जाता है दरिया,
एक से एक मिले तो राई बन सकती है पर्वत,
एक से एक मिले तो इन्सां, बस में कर ले किस्मत -
. . . . साथी।

◆◆◆

यौवन चलता सदा गर्व से

यौवन चलता सदा गर्व से सर ताने शर खींचे।
यौवन के उच्छल प्रवाह को देख मौन, मन मारे,
सहमी हुई बुद्धि रहती है, निश्चल नदी किनारे।
(ये पंक्तियाँ स्व. दिनकर की हैं, जिन्हें आगे बढ़ाया गया है)
यौवन चलता . . . . ।
यौवन कहता मैं प्रवाह हूँ, आगे बढ़ जाऊँगा,

राह में चटट्रानें आएँगी, तोड़ के मैं रख दूँगा।
यौवन चलता . . . . ।
यौवन की इक बूँद बड़ी है, सागर को शरमा दे,
यौवन की इक चिंगारी हिम के पर्वत पिघला दे।
यौवन चलता . . . . ।
जिस यौवन से टकराकर ताकत तलवार की टूटे,
उस यौवन की चादर पर, सपनों ने निकाले बूटे।
यौवन चलता . . . . ।

◆◆◆

हम पंछी एक डाल के

हम पंछी एक डाल के, एक डाल के
संग-संग डोले, जी संग-संग डोलें
बोली अपनी-अपनी बोलें - जी बोलें, जी बोलें
संग-संग डोलें जी संग संग डोलें / हम पंछी।
सूरज है फिर देने वाला, सारी दुनिया को उजियाला,
चलो साथियों, उड़ कर जाएँ,
द्वार गगन के खोलें-जी खोलें, जी खोलें
संग-संग डोलें जी संग-संग डोलें/ हम पंछी
दिन के झगड़े दिनको भूलें, रात को सपनों में हम झूलें
धरती बिछौना, नीली चदरिया, मीठी नींदे सोलें जी सोलें,
जी सोलें संग-संग डोलें।

◆◆◆

हमें उन राहों पर चलना है

हमें उन राहों पर चलना है,
जहाँ गिरना और सँभलना है
हम हैं वो दीये, औरों के लिए
जिन्हें तूफानों में जलना है।

जबतक न लगन हो सीने में
बेकार है ऐसे जीने में,
चढ़ना है हमें चंदा की तरह
सूरज की तरह नहीं ढलना है।
हमें उन....।
आकाश से आती है ये सदा
ग़म पाए अग़र तो जी न जला,
कभी हैं खुशियाँ, कभी हैं आहें,
हर हाल में हमको पलना है।
हमें उन....।

◆◆◆

वर दे वीणा वादिनी वर दे

वर दे वीणा वादिनी वर दे
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे।
काट अंध उर के बन्धन स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तम हर, प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे!
नव गति, नव लय, ताल छंद नव,
नवल कंठ नव, जलद मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे।

◆◆◆

लब पे आती है दुआ

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
जिन्दगी शमअ की सूरत हो खुदाया मेरी।

दूर दुनिया का मेरे दम से अँधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए।
हो मेरे दम से यों ही मेरे वतन की ज़ीनत।
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत।
जिन्दगी हो मेरे परवाने की सूरत या रब।
इल्म की शमा से हो मुझको मोहब्बत या रब।
हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्दमन्दों से ज़इफों से मोहब्बत करना।
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह चलाना मुझको ॥

◆◆◆

मैं गरीबों का दिल हूँ

मैं गरीबों का दिल हूँ, वतन की ज़बां,
बेकसों के लिए प्यार का आसमां।
मैं जो गाता चलूँ साथ महफ़िल चले,
मैं जो बढ़ता चलूँ साथ मंज़िल चले,
मेरी राह बिछाती चलें बिजलियाँ।
मैं गरीबों . . . . ।
कारवाँ ज़िन्दगानी का रुकता नहीं
बादशाहों के आगे मैं झुकता नहीं
चाँद-तारों से आगे मेरा आशियाँ।
मैं गरीबों . . . . ।

◆◆◆

मैं हूँ भारत की नार

मैं हूँ भारत की नार,
लड़ने-मरने को तैयार,
मुझे समझो ना कमज़ोर लोगो समझो ना कमज़ोर।

उस देश की हूँ संतान
जिसका नाम है हिन्दोस्तान
शहज़ोर बड़ी शहज़ोर लोगों समझो ना कमज़ोर।
हर खेल की हूँ मैं खिलाड़ी
मैं करती खेती-बाड़ी,
रण में तलवार घुमाऊँ
दफ़्तर में कलम चलाऊँ
और देखूँ सब घर-बार, लड़ने-मरने को तैयार, मुझे समझो . ।
मैं झाँसी की शमशीर,
मैं हूँ अर्जुन का तीर,
मैं सीता का वरदान,
दे सकती हूँ बलिदान,
मैं भीम की हूँ टंकार, लड़ने-मरने को तैयार, मुझे समझो . . ।

◆◆◆

आतिशी बुलंदी

प्रश्न - नन्हे-मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है?
उत्तर - मुट्ठी में है तकदीर हमारी,
हमने किस्मत को बस में किया है।
प्रश्न - भोली-भाली, मतवाली आँखों में क्या है?
उत्तर - आँखों में झूमे उम्मीदों की दिवाली,
आनेवाली दुनिया का सपना सजा है।
प्रश्न - भीख में जो मोती मिले, लोगे या न लोगे?
ज़िन्दगी के आँसुओं का बोलो क्या करोगे?
उत्तर - भीख में जो मोती मिले, तो भी हम ना लेंगे,
ज़िन्दगी के आँसुओं की माला पहनेंगे,
मुश्किलों से लड़ते-फिरते जीने में मज़ा है।
प्रश्न - हमसे ना छुपाओ बच्चो, हमें तो बताओ,
आनेवाली दुनिया कैसी होगी, समझाओ।

उत्तर - आनेवाली दुनिया में सबके सर पे ताज होगा,
ना भूखों की भीड़ होगी, ना झूठों का राज होगा,
बदलेगा ज़माना ये सितारों पे लिखा है।

◆◆◆

तुमको देती है सुनाई

तुमको देती है सुनाई
जो मेरी आवाज़
तो ऐ मेरी रुह की ताक़त
जाग-जाग तू जाग।
मुझको पूरे करने हैं सारे वादे
और काम सब किए हुए आधे-आधे
जो मुझसे पहले आए उनके भी लिए
संग मेरे और बाद आए उनके भी लिए
कुछ ऐसा कर जाऊँ कि अंकित रहे निशां
जिस्म न हो पर रह जाऊँ दुनिया को याद!
सुन ओ मेरे मल्लाह।
नींद तोड़ कर आ!
उठा दे लंगर जला दे दीपक
फूँक शंख, हो नाद
बढ़ा दे जहाज . . . . . !
तू जाग-जाग अब जाग।

◆◆◆

मेरे नदीम, मेरे हमसफर

मेरे नदीम, मेरे हमसफर उदास न हो,
कठिन सही तेरी मंज़िल, मगर उदास न हो।
हर इक तलाश के रस्ते में मुश्किलें हैं मगर,
हर इक तलाश मुरादों के फूल लाती है,

हज़ार चाँद-सितारों का खून होता है,
तब इक सुबह खिज़ाओं में मुस्कुराती है।
मेरे नदीम . . . . ।

कदम-कदम पे चट्टानें खड़ी रहें लेकिन,
जो चल निकलते हैं दरिया तो फिर नहीं रुकते,
हवाएँ कितना भी टकराएँ आँधियाँ बनकर,
मग़र घटाओं के परचम कभी नहीं झुकते।
मेरे नदीम. . . . . ।

जो अपने ख़ून को पानी बना नहीं सकते,
वो ज़िन्दगी में नया रंग ला नहीं सकते,
जो रास्ते के अँधेरों से हार जाते हैं,
वो मंज़िलों के उजालों को पा नहीं सकते।
मेरे नदीम . . . . ।

◆◆◆

धरती कहे पुकार के

धरती कहे पुकार के, बीज बिछा ले प्यार के,
मौसम बीता जाए।
अपनी कहानी छोड़ जा, कुछ तो निशानी छोड़ जा,
कौन कहे इस ओर, तू फिर आए न आए।
तेरी राह में कलियों ने नैन बिछाए,
डाली-डाली काली कोयल तेरे गीत गाए,
अपनी कहानी छोड़ जा . . . . ।

नीला अंबर मुस्काए, हर साँस तराने गाए
हाय, तेरा दिल क्यों मुरझाए?
मन की बंसी पे भाई, कोई धुन बजा ले
साथी! तू भी मुस्कुरा ले।
अपनी कहानी छोड़ जा . . . . ।

◆◆◆

तुम आज मेरे संग हँस लो

तुम आज मेरे संग हँस लो, तुम आज मेरे संग गा लो
और हँसते-गाते इस जीवन की उलझी राह सँवारो
तुम आज मेरे . . . . ।
शाम का सूरज बिंदिया बनकर सागर में खो जाए
सुबह-सवेरे वो ही सूरज आशा लेकर आए
नई उमंगें, नई तरंगे, आस की ज्योति जगाए रे
तुम आज मेरे. . . . . ।
दुख में जो गाए - मल्हारे वो इन्सां कहलाए
जैसे बंसी के सीने में छेद है फिर भी गााए,
गाते-गाते रोए मयूरा फिर भी नाच दिखाए रे
तुम आज मेरे . . . . ।

◆◆◆

बच्चो तुम तकदीर हो

बच्चो तुम तकदीर हो, कल के हिन्दोस्तान की
बापू के वरदान की, नेहरु के अरमान की
बच्चों . . . . ।
ज़ुल्मातों को काट के तुम इक नया सबेरा लाओगे,
जो हमलोगों से न हुआ, वह तुम करके दिखलाओगे,
तुम नन्हीं बुनियादें हो दुनिया के नए विहान की
बच्चों. . . . . ।
नारी को देवी कहकर इस देश ने दासी जाना है,
जिसको कुछ अधिकार न हो उसे घर की रानी माना है,
तुम ऐसा आदर मत लेना, आड़ हो जो अपमान की।
बच्चों . . . . ।

◆◆◆

Such a feeling is coming over me
There is wonder in most everything I see
Not a cloud in the sky, got the sun in my eyes
And I won’t be surprised if it's a dream
Everything I want the world to be
is now coming true specially for me
And the reason is clear, it's because you are here.
All the newest things in the heaven that I have seen
I am on the top of the world looking down on creation
And the only explanation I can find,
is the love that I have found
ever since you been around
Your love puts me at the top of the world)
खाली बादलों से है जो आसमाँ
छूटें पतवारें टूटें किश्तियाँ
सूरज से नज़र मिला, सहराओं में गुल खिला
चल आगे बढ़ा कारवाँ
राहें जहाँ तक ले जाएँ अपनी पलकें बिछाए
देखे रास्ता हमारा ये जहाँ।
Something in the wind has learnt my name
and it’s telling me that things are not the same
In the leaves on the trees and the churls of the breeze
There's a pleasant sense of happiness for me
There is only one wish on my mind
When this day is through, I hope that I will find
that tomorrow will be just the same for you and me
And I need will be mine if you are here.
नीले ख्वाबों सा नीला आसमां
नीली रोशनी का नीला ये मकां
नीले पेड़, नीले साए, नीली दुनिया बसाए
नीली बाँहे बढ़ाएँ मेहरबां
रंग लिए ढेर सारे, नन्हे पंख पसारे
घूमे गुलशन-गुलशन तितलियाँ ॥

◆◆◆

आने वाले कल की तुम तस्वीर हो

आने वाले कल की तुम तस्वीर हो
नाज़ करेगी दुनिया तुम पर दुनिया की तक़दीर हो।
तुम हो किसी कुटिया के दीपक जग में उजाला कर दोगे,
भोली-भाली मुस्कानों से सबकी झोली भर दोगे।
बढ़ते चलो ज़माने में तुम चलता हुआ इक तीर हो
नाज़ करेगी . . . . ।

नाम न लेना रोने का रोतों को हँसाने आए हो,
नहीं रूठना कभी कि तुम रूठों को मनाने आए हो।
जो रूठी तकदीर बदल दे, तुम ऐसी तदवीर हो
नाज़ करेगी. . . . . ।

इक दिन होंगे ज़मी-आसमां, चाँद-सितारे हाथों में,
होगी इक दिन बागडोर भारत की तुम्हारी हाथों में
तोड़ सके ना दुश्मन जिसको तुम ऐसी ज़ंजीर हो
नाज़ करेगी . . . . ।

◆◆◆

देश हमारा, धरती अपनी

देश हमारा, धरती अपनी, हम धरती के लाल,
नया इतिहास बनाएँगे, नया संसार बसाएँगे।

सौ-सौ स्वर्ग उतर आएँगे, सूरज सोना बरसाएँगे,
नई चेतना, नए विचारों की हम लिए मशाल
नया दिनमान बनाएँगे, नया संसार बसाएँगे।

सुख-सपनों के स्वर गूँजेंगे, मानव की मेहनत पूजेंगे,
नये क्षितिज के लिए बदल देंगे तारों की चाल
समय को राह दिखाएँगे, नया संसार बसाएँगे।

एक करेंगे हम जनता को, सींचेगे जगकी ममता को
धर्म, जाति, भाषा का न उठने देंगे कोई सवाल,
मनुज को मुक्ति दिलाएँगे, नया संसार बसाएँगे।

माता जाह्नवी तू हमें

हिमालय की संजीवनी पर, क्या नहीं अपना अधिकार है
क्या नहीं हमारे लिए, पुण्य सलिला का मुक्तिद्वार है?
आनेवाली संततियों का है दोष क्या,
माता जाह्नवी तू उन्हें छोड़के न जा।
हम भी तो जाने ज़रा कि गंगाजल है क्या,
माता जाह्नवी तू हमें छोड़के न जा।
गंगा तू केवल इक नदी नहीं है
आर्यावर्त की संस्कृति की कथा है
सच है आज हमारे दुष्कर्मों से क्षत-विक्षत है तू,
माँ तेरे उर को तेरे जायों ने, दी अक्षम्य व्यथा है।
तेरे लिए क्षमा दान कठिन तो है माँ,
किंतु तू है माँ, तो कर हमें क्षमा।
तेरा घाट उत्तरीय स्वच्छ करेंगे,
दूर तुझसे तेरा हर विपक्ष करेंगे
अब कोई कलुष तुझे ग्रस न पाएगा
तेरा जल ही पुरखों का तर्पण कराएगा
अपने जल का उत्तराधिकार हमें दो
भागीरथी ठहर जाओ, लौट आओ
अपने जगमग जल का अधिकार दो।

◆◆◆

इन्द्रधनुषी प्रार्थना

काबे में रहो या काशी में,
मतलब तो उसी की बात से है,
गुरु, ईशू, राम, रहीम कहो,
पर गरज़ उसी की बात से है।

जैन प्रार्थना

जो देवों का देव

जो देवों का देव, विश्वजन
जिसके चरणों में श्रद्धानत।
उसी वीर प्रभु विश्व ज्योति को
वंदन, अभिनंदन हो संतत।।

सव्वं जगं

सव्वं जगं समयाणुपेही,
पियमप्पियं कस्स वि नो करेज्जा

(सूत्रकृतांग, महावीर)

वाया दुरुत्ताणि

वाया दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि,
वेराणुबंधीणि महाब्भयाणि।

(दशवैकालिक, महावीर)

अप्पा चेव

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो,
अप्पा दंतो सुही होई, अस्सिं लोए परत्थ य।

(उत्तराध्ययन, महावीर)

◆◆◆

बौद्ध प्रार्थना

घबराये जबमन

घबराये जबमन अनमोल
और हृदय हो डावाँडोल
हे मानव! तू मुख से बोल
बुद्धं शरणं गच्छामि।
जब दुनिया से प्यार उठे
नफरत की दीवार उठे
माँ की ममता पर जिस दिन
बेटे की तलवार उठे,
धरती की काया काँपे
अंबर डगमग उट्ठे डोल,
हे मानव! तब मुख से बोल -
बुद्धं शरणं गच्छामि
संघं शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि।

◆◆◆

इस्लामी प्रार्थना
(कुरआन-शरीफ के सौजन्य से)

व अल नबलू बशी

व अल नबलू बशी मिन्न, मिन-अल खौफ़े वल जूये, व नक़सिन, मिनअल मवाले, व अल नुफसे व अल सम्मेरातें व बश्शीरे अल साबरीन,

अल्लाह का वादा है, अपने नेक बन्दों की हमेशा हिफ़ाज़त करेंगे जो एखलाक और मुहब्बत का पैग़ाम दुनिया में फैलाएँगे, तू इस फ़ानी दुनिया में बेशक खौफ़-ओ-ख़तर, जान और माल, गम और तकलीफ़ में मुबतिला होगा, लेकिन इन आज़माइशों में जो बन्दे सबर करें उन पर अल्लाह की ख़ास रहमत नाज़िल होगी। आमीन।

व लतकुन्न, मिन्नकुम

व लतकुन्न, मिन्नकुम, उम्मते, यददे उने एला अल खैर व या मरून, बिल मारूफे व, यनहौन, एने अलमुनकिरे,

तुम एक ऐसी जमाअत कायम करो, जो ख़ैर की तरफ दावत है, जो सुकून और मुहब्बत का पैगाम दे, सिलारहमी और आपसी ऐतमाद को अमली तौर पर फैलाए, रिश्तेदारो, दोस्तो और पड़ोसियों के हक की हिफाजत करें, ईमान जिसका हथियार हो, अमल जिसका तरीकाए जिन्दगी हो, हर इनसान एक दूसरे के हक की हिफाज़त करे, हर मज़हब की इज्ज़त करें और मुकम्मल इनसान बनें।

इननतलाहा ला यो हिब्बुल

इननतलाहा ला यो हिब्बुल मोतदीन। वला तस्नुल फजल नैनकुम।

अल्लाह ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता। अल्लाह ने तुम्हें अशरफ उल मख़लुक़ात बनाया है। यह जिन्दगी उसकी अमानत है। ईमान तुम्हारी रूह है। ईमान को पाक़िज रखो, दिल में वसअत, जुबान में मिठास, रहम और हमदर्दी और ख़िदमत-ख़ल्क़ से अपनी रूह को तरोताज़ा रखो। ईमान और अमल के तवाजुम से अपने नफस की निगहबानी करो और अल्लाह की इमानत में ख्यानत ना करो। अल्लाह मुहब्बत करने वालो को अपने नज़दीक रखता है।

करती हूँ हम्द उसकी

करती हूँ हम्द उसकी जो राह पे कदीम है।
यारब तू बड़ा ही ग़फ़ूर-उर-रहीम है।
जिसका कि ज़र्रे-ज़र्रे पर लुत्फ़ अज़ीम है।
फिर क्यों ना दिल से उसकी सदा बन्दगी करुँ।
तुम सब पढ़ो दरूद, मैं जिक्रे नबी करुँ।

गरज-बरस प्यासी धरती

गरज-बरस प्यासी धरती पर
फिर पानी दे मौला
चिड़ियों को दाने बच्चों को,
गुड़-धानी दे मौला।
दो और दो का जोड़ हमेशा चार कहाँ होता है?
सोच-समझवालों को थोड़ी नादानी दे मौला।
फिर रोशन कर ज़हर का प्याला चमका नई सलीबें
झूठों की दुनिया में सच को ताबानी दे मौला
फिर मूरत से बाहर आकर चारों ओर बिखर जा
फिर मंदिर को कोई मीरा दीवानी दे मौला।

जो भूल चुके हैं हम

जो भूल चुके हैं हम, तुम याद दिला देना,
जो जानते नहीं हम, सबकुछ वो सिखा देना।
भटके हैं अपनी रह से, कुछ सूझता नहीं है,
ऐ अल्-हफीज़ सबको, मंज़िल से मिला देना।
अल्-बारी, अल्-मुसव्विर, अल्-वाली, अल्-मुहैनिन!
तारीकियों के मारों को सुबह दिखा देना।
दर से तेरे सवाली कोई लौटता नहीं है,
दम तोड़ती उम्मीदों को छूके जिला देना।
बिखरा है दोजहाँ में जो नूर, बस तिरा है
इस नूर तक पहुँचने का सबको पता देना।
नेकी पे जो चले हैं, वो तेरे साए में हैं
बद को भी माफ करना और नेकी सिखा देना।

◆◆◆

ईसाई प्रार्थना

(Give Me Oil in My Lamp का हिन्दी अनुवाद)

न हो निष्तैल मेरा दीपक
जलाए रखना सदा प्रभु! अँधेरा दूर कर सकूँ मैं।
न हो जबतक इति जीवन की
तुम्हारी कृपा का करुँ बखान
तुम्हारा नित्य करूँ जयगान,
हो स्वामी तुम सम्राटों के
नहीं है तुमसा कोई महान
शांत सिंधु सा स्थिर चित्त
रहे देता सबको विश्राम
तरंगित आनंदित अंतर
करे जग-सुख का जो आह्वान
हो इतना आर्द्र प्रेमजल से
सुधा बरसे अंतस्तल से
कि इस तन-मन को, जीवन को
चलाए रखना सदा प्रभु! अँधेरा दूर कर सकूँ मैं।

◆◆◆

पारसी प्रार्थना

जिसकी सोच में हो ख़ूबसूरती
ख़ूबसूरत है आदमी वही।
आदमी है ख़ूबसूरत वही,
जिसकी बात सबको देती है खुशी।
काम है वही जो काम आए किसी के
जिसको करने से न दिल किसी का भी दुखे
ऐसे एक काम का सुकून पा के देख
करके जिसे झूम उठे ज़िन्दगी।
आदमी है खूबसूरत वही,
जिसकी सोच में हो खूबसूरती।
यह सुकून होगा तेरे साथ ताउमर,
हँस के तू बिताएगा, उम्र का सफर,
मगर,
उसीकी है सुकून की यह सल्तनत,
जिसका रूह-ए-अक्स है इंसानियत
जो न इससे बढ़के माने दूसरा धरम
आने से जहाँ न किसी को हो मनाही
समझो वहीं साहब का बन गया हरम।

('जेंद अवेस्ता' के एक अंश का प्रार्थना हेतु काव्य रूपान्तर)

◆◆◆

बहाई प्रार्थना

तू अजेय, सर्वशक्तिमान है,
तू है क्षमाशील, तू महान है।
भर दे हमें प्रेम की सुगंध से,
मुक्त कर दे अँधेरों के बन्ध से।
तेरी विभा से हों विभासित बहा!
ये ज़मीन-आसमां, सारा जहाँ,
हर तरफ अयां हो अमन-शांति का रंग,
आपस में आदमी करे न कभी जंग।
तेरी कृपा का सदा बरसता रहे जल,
अपने मनुपुत्रों का तू परिष्कार कर,
घृणा-द्वेष को न कहीं ठौर मिल सके,
तेरे गुलिस्तां में ऐसे फूल खिल सकें।
तू ही मंदिरों की प्रार्थना प्रभु!
और मस्जिदों की तू अजान है,
गिरजा में, अगियारे में,
बहा तू गुरुद्वारे में,
तू कहाँ नहीं दयानिधान है!
तू अजेय . . . . ।

◆◆◆

गाँधी स्मृति

इति हो जीवन की तो ऐसी,
कई कोटि करों से जिसके शव पर फूल चढ़े,
अंतिम प्रणाम देने के लिए
कई कोटि जनों के काँपते दोनों हाथ जुड़े,
स्वयं को संजीवित करने को,
कई कोटि मुखों से जिसकी जय-जयकार हुई,
वह मर कर भी अगणित हृदयों में अमर हुआ

''तुममें कोई गौतम होगा, तुममें कोई होगा गाँधी''

रघुपति राघव राजा राम

रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीताराम
ईश्वर, अल्ला तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान
रघुपति राघव राजा राम . . . . ।
सीताराम, सीताराम, भज प्यारे तू सीताराम
मर्यादा पुरुषोत्तम राम, पावन कर गयो कोशलधाम
शांति विधायक राजा राम, पतितपावन सीताराम
रघुपति राघव राजा राम . . . . ।
सूर्यवंशी कुलदीपक राम, कृपासिंधु जनपालक राम
शापित के उद्धारक राम, तुलसीदल सम पूजितराम
रघुपति राघव राजा राम . . . . ।
जिस मुख में हैं राम ही राम, उसका कौन बिगाड़े काम
अंतकाल जिह्वा पर राम है जिसके वो जाए सुरधाम।
रघुपति राघव राजा राम . . . . ।

◆◆◆

वैष्णव जन तो तेने कहिए

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड़ पराई जाणे रे।
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे।।
सकल लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे के नीरे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी ते नीरे।।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।।
मोह माया व्यापे नहि जेणे, दृढवैराग्य जेना मनमा रे।
रामनामशूँ तालीलागी, सकल तीरथतेना तनमा रे।।
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोधनिवार्या रे।
भणे नरसैंयो तेनु दरसन करता, कुल एकोतेरतार्या रे।।

◆◆◆

वह अमरगीत का गायक था

वह अमरगीत का गायक था।
सारे जग से वह प्यारा था
सारे जग से वह न्यारा था
भारत का राजदुलारा था
माँ की आँखों का तारा था
वह सत्य-अहिंसा दायक था
वह अमरगीत का गायक था।
वह दया दान व्रतधारी था
वह सच्चा प्रेमपुजारी था
राजा था, बना भिखारी था
कलयुग का वही मुरारी था
वह जन-गण-मन अधिनायक था
वह अमरगीत का गायक था।

◆◆◆

दे दी हमें आज़ादी

दे दी हमें आज़ादी बिना खड्ग, बिना ढाल,
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल
आँधी में भी जलती रही गाँधी तेरी मशाल
साबरमती के संत...। रघुपति राघव राजा राम . . . . ।
धरती पे लड़ी तूने अजब ढब की लड़ाई
दागी न कहीं तोप न बंदूक चलाई
दुश्मन के किले पर भी न की तूने चढ़ाई
वाह रे फकीर! खूब करामात दिखाई
चुटकी में दुश्मनों को दिया देश से निकाल
साबरमती के संत...। रघुपति राघव राजा राम . . . . ।

शतरंज बिछा कर यहाँ बैठा था ज़माना
लगता था कि मुश्किल है फिरंगी को हराना
टक्कर थी बड़े ज़ोर की, दुश्मन भी था दाना
पर तू भी था बापू बड़ा उस्ताद पुराना
मारा वो कस के दाव कि उलटी सभी की चाल
साबरमती के संत...। रघुपति राघव राजा राम . . . . . . ।
जब-जब तेरा बिगुल बजा जवान चल पड़े
मज़दूर चल पड़े थे और किसान चल पड़े
हिन्दू औ' मुसलमान, सिख, पठान चल पड़े
कदमों में तेरे कोटि-कोटि प्राण चल पड़े
फूलों की सेज छोड़ के दौड़े जवाहरलाल
साबरमती के संत...। रघुपति राघव राजा राम . . . . ।
मन में थी अहिंसा की लगन तन पे लँगोटी
लाखों में घूमता था लिए सत्य की सोटी
वैसे तो देखने में थी हस्ती तेरी छोटी
लेकिन तुझे झुकती थी हिमालय की भी चोटी
दुनिया में तू बेजोड़ था इन्सान बेमिसाल
साबरमती के संत...। रघुपति राघव राजा राम . . . . ।
जग में कोई जीया है तो बापू तू ही जीया
तूने वतन की राह में सबकुछ लुटा दिया
माँगा न कोई तख्त न तो ताज ही लिया
अमृत दिया सभी को मगर खुद ज़हर पिया
जिस दिन तेरी चिता जली रोया था महाकाल
साबरमती के संत...। रघुपति राघव राजा राम . . . . . ।

◆◆◆

रजत सूत्र

बच्चे प्रत्याशा में होंगे
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के
भरता कितनी विह्वलता है!

ऐसा देश कहीं न देखा

ऐसा देश कहीं न देखा, कभी न सुना है,
देशों में सरताज यह भारत देश है।
स्वयं न खाके सबको खिलाती है माँ कहाँ?
प्यारी बहन प्रेम राखी बाँधती कहाँ?
युद्धक्षेत्र में जब लड़ते हैं बाँकुरे,
दूर बैठी दिन गिनती भामिनी कहाँ?

◆◆◆

माता-पिता

हम फूल हैं तो आप बागबां हैं,
है भाग्य हमारा,
कि अपने घर की देहरी पे साया है पिता का,
और खड़ी आँगन में माँ है।
ईश्वर का रूप अगर कहीं है,
तो वो रूप माता-पिता में ही है।
बनी रहे सर पे सदा शीतल ये छाँव
ये मुखिया हैं तो बड़ा सुंदर है गाँव
रिश्तों का ये हीरक-हार हैं
ये हैं तो सारा संसार है।
बुज़ुर्गों की भेंट हमें इनसे मिली
भाई-बहनों से घर की बगिया खिली
कड़ी-दर-कड़ी, कितने नाते जुड़े,
बाँध के कतार, पंछी इक संग उड़े
लाख चले आँधियाँ या तूफान आए
ग्रहण कभी रिश्तों को लगने न पाए
रिश्तों से हर घर है, रिश्तों से हम हैं
चाहे कोई कुछ भी हो, रिश्तों से कम है

आओ चले ऐसा परिवार इक बनाएँ
सारा जग हो जिसमें, कुटुम्ब वो बसाएँ
हो जहाँ हर कोई अपना,
एक की आँखों में हो दूजे का सपना
देहरी पर खड़े हों पिता,
घूमती हो आँगन में माँ,
और सबके माथे पर हो
रिश्तों का नीला आसमां।

◆◆◆

माँ को समर्पित

माँ तिनके चुनने जाती है, माँ तिनके चुनकर लाती है,
माँ दाना चुगने जाती है, माँ दाना चुगकर लाती है।
यह नीड़ मेरे बच्चों का है, यह सोच के नीड़ बनाती है,
मेरे जाये यह खाएँगे, यह सोच के दाना लाती है।
वह चिड़िया हो या औरत हो, माँ कितनी प्यारी लगती है!
मिथिला की गौरव गाथा की, सीता सुकुमारी लगती है।

हैं कृष्ण किवाड़ों के पीछे और छड़ी यशोदा के कर में,
क्या करुँ हरि यह सोच रहे, फिर पड़ा हूँ माँ के चक्कर में।
यों डरते थे नंदलाल सुनो, यों थे जग के प्रतिपाल सुनो,
संसार को रचनेवाले भी, अपनी माँ के थे लाल सुनो।

वह भोजन था या आभूषण या वस्त्र, अध्ययन जो भी रहा,
''यह बहुत प्रिय मेरे राम को है'' कैकेयी ने बस यही कहा।
तबतो कौशल्या विस्मित थीं, अचरज में अवध नरेश पड़े
कि 'मेरे राम' कहनेवाली जिह्वा पर कैसे घन उमड़े?

महाप्रजावती चिल्लाई थीं - '' हा! दूध पिलाया था मैंने!
धमकाया, मारा-पीटा था, पर गोद खिलाया था मैंने।
कैसे वह मुझको छोड़ गया? क्यों मुझसे पूछके नहीं गया?
नहीं अर्थ दे सका जब मेरा, किस सिद्धि हेतु सिद्धार्थ गया?''

चलते ही सर्द हवाओं के माँ ठिठुर-ठिठुर सी जाती है,
और देख आँधियों के साए भय से छाती भर जाती है -
''मेरे बच्चे भूखे होंगे, पर मेरे बिन डरते होंगे!
दाना चुग लूँ या घर जाऊँ!! जाने वो क्या करते होंगे!''
यह धूप, आग, आँधी, पानी जिसने सबकुछ इक साथ सहे,
किसी वाल्मीकि से ही संभव है, जो सीता की कथा कहे।

◆◆◆

पिता के नाम

तेरे आशिषों की छाँव तले,
यह लता हर पल फूले-फले
कहीं भूले से ये छाँव हटे ना
सुख की ये शारदीय धूप कटे ना
प्यार के उजले ये बादल छँटे ना!
भाग हमारा, हम हैं तुम्हारे,
तेरी आँखों के चाँद-सितारे,
बपचन बीता, आई जवानी
पर इस मीठे सागर का ये पानी
अपनी दुआओं से कभी भी घटे ना! तेरे . . . . !
जीवन-पात्र मेरा ख़ाली रह जाता,
पिता के रूप में जो तुम्हें नहीं पाता
इसके आगे नहीं निष्कर्ष कोई,
दूसरा नहीं मेरा आदर्श कोई,
और कहीं पे कभी हम तो झुके ना! तेरे. . . . . !

◆◆◆

राखी बस कुछ सूत नहीं

राखी बस कुछ सूत नहीं,
सोने-चाँदी का तार नहीं,
सावन का इक त्योहार नहीं
यह राखी एक वचन है।
राखी है दुआ बहनों की
राखी भाई का प्रण है, यह राखी एक वचन है।
भीगे आँचल का इक धागा
था कर्मवती ने भेजा,
सर से लगा के उसको हुमायूँ ने
मन में ऐसे सहेजा,
और कहा, 'बहन की रक्षा में अर्पित मेरा जीवन है।'
यह सदियों का पावन रिश्ता,
पूजा का आयोजन है,
यह राखी एक वचन है।

◆◆◆

मौसम के रंग हाथों में
(संतान के प्रति)

मौसम के रंग हाथों में,
भरकर तू मेरे घर आया।
मन को छूकर हवा चली,
छत पर बादल लहराया।
प्यासे थके किस राही को मैंने पानी पिलाया था?
मौत के दर से हाथ पकड़ मैंने किसे जिलाया था?
पतझड़ के रूखेपन में हरसिंगार खिल आया था।
धूप से तपते जीवन में, सुख का तू मीठा साया।
मन को छूकर. . . . . ।

बपचन मेरा बीता हुआ लौटा मेरी देहरी पर,
जाग उठे हर खेल मेरे, संग तेरे घुटने चलकर,
तेरी चमकती आँखों में, चाँद-सितारे मुस्काकर
मुझसे कहते हैं मैंने फिर से नया जीवन पाया।
मन को छूकर . . . . ।

◆◆◆

बैठी सगुन मनावति

बैठी सगुन मनावति माता।
कब ऐहैं मेरे बाल कुसल धर कहहु काग फुर बाता ॥ 1 ॥
दूध भातकी दोनी देहौं सोने चौंच मढ़ैहौं।
जब सिय सहित बिलोकि नयन भरि राम-लखन उर लैहौं ॥ 2 ॥
अवधि समीप जानि जननी जिय अति आतुर अकुलानी।
गनक बोलइ पायँ परि पूछति प्रेम-मगन मृदु बानी ॥ 3 ॥
तेहि अवसर कोउ भरत निकट तें समाचार लै आयो।
प्रभु आगमन सुनत तुलसी मनों मीन मरत जल पायो ॥ 4 ॥

◆◆◆

कन्या गीत

हमर अपन किशोरी छत सुन्दर एहन,
नहीं पायब कतहूँ हेरु चौदह भुवन।
करिया केस जेना कार बादरिया,
माथे प चमचम साजल बिजुरिया,
बिधि नेह से रचयलन खंजन नयन, ... नहीं पायब
मइया क सीख अँचरा गाँठ बाँधल,
बाबा के लाज सिर-आँख प राखल
प्राण जायत, न जायत सिया के वचन, ... नहीं पायब
जनकसुता जे अवधपुर जायत,
दसरथ के राजकोस हरिआयत,
होयत धन-धन रघुराई के जीवन, ... नहीं पायब

पुनरागमन

झुमक-झुमक झूम-झूम चले पुरवइया
जैसे ससुरा से नइहर बिदा होय रे।
ठौर रुके ठौर चले भइल मतवरिया,
बिसरल सास-ननदिया के गरिया
अम्मा के अँगनवा, बाबा के दुअरिया,
बाट जोहत होइहें आज मोरे भइया
सुभे मंगल के दिनवा सुभे होय रे। झुमक . . . . ।
नइहर में सन-न-न-न-न दौड़ब दिन रतिया,
अमवा के बगइचा बइठ गाइब परतिया,
अम्मा के रे गोदिया, बाबा के लग छतिया,
इक्कट-दुक्कट खेलिहन फगुनी-चैत पछिया,
इहे सोचके त सुख स जिया रोय रे। झुमक. . . ।
माघ बिता चललीं अषाढ़ बिता आइब,
होली धम्मार मिल भौजी संग गाइब,
गोटा लागल लहँगा बाबा से मँगाइब
भइया दीहें ललकी छपावल चुनरिया
अम्मा कहिहें 'हे हरि! इहे बनल रहे रे'। झुमक . . . . . . ।

◆◆◆

जन्मोत्सव-गीत

जनम लियो ललना कि चाँद मोरे अँगना
उतरि आयो हो,
धन-धन भाग, सकल भई साध आनंद
मनावहि हो।
ललन मनभावन, सूरतिया सुहावन, निरखी सुख
पावहिं हो,
बलिहारी जाऊँ, ले टीका लगाऊँ, नजर से
बचावहिं हो।

ENGLISH SONGS

My heart leaps up when I behold,
A rainbow in the sky :
so was it when my life began
so is it now I am a man;
so be it when I shall grow old
or let me die!
The child is father of the Man
I could wish my days to be
Bound each to each by natural piety.

All Things Bright and Beautiful

All things bright and beautiful,
All creatures great and small
All things wise and wonderful
The Lord God made them all.
Each little flower that opens
Each little bird that sings
He made their glowing colours,
He made their tiny wings.
The purple-headed mountain,
The river running by,
The sunset and the morning,
That brightens up the sky
The cold wind in the winter,
The pleasant summer sun,
The ripe fruits in the garden,
He made them everyone.
He gave us eyes to see them
And lips that we might tell,
How great is God Almighty
Who has made all things well.

◆◆◆

Make Me a Channel of Your Peace

Make me a channel of your peace
Where there is hatred, let me bring your love
Where there is injury your pardon lord
And where there's doubt true faith in you
Oh! Master grant that I may never seek
So much to be consoled as to console
To be understood as to understand
To be loved as to love with all my soul.

◆◆◆

In Need of Liberation

The world stands in need of liberation, my lord,
It still has to feel your power.
The blind and the deaf, the dumb and the maimed,
All need to feel your healing touch.
The world stands in need of liberation, my lord,
It still has to learn to love.
There are those who have eyes but refuse to see
The inhumanity that's done
There are those who have ears but refuse to hear
The cries of those in agony.
There are those who have mouth but refuse to speak
Against injustice done to some
There are those who have hands but refuse to reach
Them out in love and charity.

◆◆◆

Prayer for Peace

Lord we pray for golden peace
Peace all over the land
May all dwell in liberty,
Walking hand in hand,
Banish fear and ignorance
Hunger thirst and pain
Banish poverty,
Let no one love in vain {2}

Keep all of us forever one
One in love and grace
Wipe away all war and strife,
Give freedom to each race.
Let your justice reign supreme
And righteousness be done,
Let goodness rule the heart of all
And evil be overcome.

◆◆◆

Pit Pit Patter

I love the pit pit patter of the rain drops,
I love the buzz buzz buzzing of the bee
But the thing I love
The very very best is to know that god loves me,
I love the hiss hiss hissing of the green snake,
I love the roar roar roaring of the sea
But the sound I love best
The very very best is to know that god loves me.

◆◆◆

Give Me Oil In My Lamp

Give me oil in my lamp, keep me burning,
Give me oil in my lamp, I pray
Give me oil in my lamp, keep me burning
Keep me burning till the end of the day
Sing Hosanna, sing Hosanna
Sing Hosanna to the king of the kings
Give me peace in my heart, keep me resting ......
Give me joy in my heart, keep me praising ....
Give me love in my heart, keep me serving ....

◆◆◆

God Make My Life

God make my life a little light
Within the world to glow;
A little flame that burneth, bright
Wherever I may go

God, make my life a little flower,
That gives the joy to all,
Content to bloom in native bower,
Although the place be small.

God make my life a little song,
That comforts the sad,
That helps the other to be strong,
And makes the singer glad.

Walking with The Lord

Walking with the lord we are
Walking in the morning
Lift up your hearts for you 're
Walking with the God
Singing to the lord we are singing in the sunshine
Lift up your hearts for you are singing to the God
Hand in hand with everyone we are walking
Walking
Black and white and brown together walking
Walking
Singing new songs now living new lives
Building new bridges walking distant miles
Well we're walking with the lord
We are ....morning
Rain and storm will not prevent us
Walking walking
Faith and hope and love will send us
Walking walking
Crossing all barriers climbing all stiles
Breaking through fences walking distant miles
Well we're walking with the lord ....

◆◆◆

Little Drop of Water

Little drops of water,
Little grains of sand,
Make the mighty ocean,
And the pleasant land.
Thus the little minutes,
Humble though they be,
Make the mighty ages
Of eternity.
Little deeds of kindness
Little words of love,
Make this Earth and Eden
With the heaven above.

God made the Earth

God made the earth, He made the sky,
God made the fish and birds that fly,
Animals, flowers and trees so tall,
God made everything great and small.

◆◆◆

Dawn it is Breaking

Dawn it is breaking
The night it has gone
Day is beginning the air's
Filled with song
All round there is music and
Beauty and peace
Thank you O lord! for sharing
These things with me
Walking through fields near the
Sound of the wind
Carried along by the song that
It sings
Set by a stream
On a warm afternoon
Flowing along with its
Own special tunes
Stand on a beach, see
The sea meets the sky
Waves breaking gently
While white sea gulf cry
Sun it is setting
The night it is night
Day it is ending the moon's
In the sky.

◆◆◆

We Shall Overcome

We shall overcome {twice}
We shall overcome some day,
Oh! deep in my heart,
I do believe
That we shall overcome some day,
We'll walk hand-in-hand {2}
...some day.
We are not afraid {2}
...today.
The truth shall make us free {2}
...some day.
We shall live in peace {2}
...some day.

◆◆◆

One Autumn Morn

One autumn morn
I chanced to cross
A field of corn;
And there it was
That blessed morn –
To sinful me
The grace was given
On earth to see
The ways of Heaven:
I saw a bird
And heard a voice
I ne'er before
Had seen or heard
I did rejoice
Yet with my joy
Was holy awe
At what I saw;
At every ear,
Throughout the field,
A bird, and clear

A voice, 'Spare, spare!'
Was it my prayer
That blessed morn
While I did cross
The field of corn?
Perchance it was
To sinful me
Such grace was given
On earth to see
The ways of heaven.

◆◆◆

Father, we thank Thee

Father, we thank Thee for the night,
And for the pleasant morning light,
For rest and food and loving care,
And all that makes the world so fair.
Help us to do the things we should,
To be to others kind and good,
In all we do, in work or play,
To grow more loving everyday.

◆◆◆

When the mists have rolled in splendour

When the mists have rolled in splendour
From the beauty of the hills,
And the sunlight falls in gladness
On the river and the rills,
We recall our Father's promise
In the rainbow of the spray;
We shall know each other better
When the mists have rolled away.

◆◆◆

No man is an Island

No man is an island
No man stands alone
Each man's joy is joy to me
Each man's grief is my own.
We need one another
So I will defend
Each man as my brother
Each man as my friend.

◆◆◆

There are numerous strings in your lute

There are numerous strings in your lute
Let me add my own among them
Then when you smile your chords,
My heart will break its silence,
And my heart will be one with your song.
Amidst your numberless stars,
Let me place my own little lamp.
In the dance of your festival of lights
My heart will throb,
And my life will be one with your smile.

◆◆◆

Behold our family here assembled

Behold our family here assembled.
We are grateful for this place in which we dwell;
For the love that unites; for the peace accorded us this day;
For the hope with which we expect the morrow;
For the health, the work, the food, and the bright skies,
That make our lives delightful.
Let peace abound in all our company.
Purge out of every heart the lurking grudge.
Give us grace and strength to forbear and persevere.

Offenders ourselves, give us the grace to accept and forgive offenders.

Forgetful ourselves, help us to bear cheerfully the forgetfulness of others.

Give us courage and gaiety, and a quiet mind.

Spare to us our friends, soften to us our enemies.

Give us the strength to encounter that which is to come,

That we may be brave in peril, constant in tribulation,

Temperate in wrath and in all changes of fortune

And, down to the gates of death, loyal and loving, one to another.

◆◆◆

Blessed with Life and Light

Blessed with life and light,
We are grafteful today
For the beauty of this world,
For sunshines and flowers,
Storm cloud and starry night,
For the first radiance of dawn
And the last smouldering glow of the sunset.
We are grateful for physical joy,
For the ecstasy of swift motion,
For deep water to swim in,
For the goodly smell of rain on dry ground,
For hills to climb,
And hard work to do
For all skill of hand and eye,
For music that lifts our hearts
In one breath to heaven,
And for the hand grasp of a friend.

◆◆◆

Grant that We Here

Grant that we here may be set free from fear;
From fear of evil, from fear of weakness, from fear of pain;
And that we may spend the day
Without dishonour to ourselves of hurt to others,
And when evening comes, may lie down in peace.
Deliver us from mean hopes and cheap pleasures,
From seeking favours or from shirking hardships.
Have mercy on each in his failings; let him be not downcast,
Support the stumbling on their way, and give at last rest to the weary.

◆◆◆

Let us Strive

Let us strive to bring that day nearer,
When our country shall be truly one;
When every barrier shall be broken down;
When no man shall work for his own selfish good;
When no man shall defraud or oppress his neighbour;
When no man shall reckon his neighbour worse than himself;
When none shall be despised or outcast,
But all shall be free to work with pride and equality,
For the glory of our country.

◆◆◆

Where the Mind is without Fear

Where the mind is without fear
And the head is held high;
Where knowledge is free;
Where the world has not been broken up
Into fragments by narrow domestic walls;
Where words come out from the depth of truth;
Where tireless striving stretches its arms
Towards perfection;
Where the clear stream of reason has not lost its way,
Into the dreary desert sand of dead habit.
Where the mind is led forward by thee,
Into ever widening thought and action.
Into that heaven of freedom, my father,
Let my country awake.

◆◆◆